वर्ष 40, अंक 06, दिसम्बर, 2004, मूल्य 5.00

ज्ञानामृत





1. **आबू रोड (शान्तिवन)**- 'सामाजिक एकता में सन्तों का योगदान' विषयक सन्त सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, हरिद्वार के षटदर्शन साधु समाज के अध्यक्ष श्री 108 मण्डलेश्वर महंत दर्शन सिंह जी त्यागमूर्ति, हरिद्वार के प्राचीन अवधूत मण्डल आश्रम के महामण्डलेश्वर हंसप्रकाश जी, ब्र.कु. मोहिनी बहन जी, ब्र.कु. रमेश भाई जी तथा अन्य। 2. **पटना**- 'शान्ति एवं सद्भावना महोत्सव' का उद्घाटन करते हुए राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी, राजयोगिनी दादी जानकी जी, बिहार के राज्यपाल महामहिम भ्राता बूटा सिंह जी तथा अन्य।

















1. रायपुर- चैतन्य देवियों की झाँकी का उद्घाटन करते हुए छत्तीसगढ़ के स्वास्थ्य मन्त्री भ्राता कृष्णमूर्ति बाँधी जी, विधान सभा सचिव भ्राता देवेन्द्र वर्मा जी, ब्र.कु. कमला बहन तथा अन्य। 2. भुबनेश्वर- उड़ीसा के मुख्यमन्त्री भ्राता नवीन पटनायक जी का स्वागत करती हुई ब्र.कु. पार्वती बहन। 3. कुल्लू- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए हिमाचल प्रदेश के कृषि मन्त्री भ्राता राजकृष्ण गौड। साथ में हैं ब्र.कु. किरण बहन, ब्र.कु. कृष्णा बहन तथा अन्य। 4. जबलपुर (नेपियर टाउन)- आध्यात्मिक कार्यक्रम में सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. भावना बहन। साथ में मंच पर उपस्थित हैं रानी दुर्गावती विश्वविद्यालय के कुलपति भ्राता एस.पी. गौतम, पत्रकार भ्राता रविन्द्र वाजपेयी, अधिवक्ता भ्राता आदर्श मुनि त्रिवेदी तथा जादूगर भ्राता एस.के. निगम। 5. छिन्दवाड़ा- आध्यात्मिक झाँकी का उद्घाटन करते हुए मध्यप्रदेश के वनमन्त्री भ्राता चौधरी चन्द्रभान सिंह, नगर भाजपा अध्यक्ष भ्राता विजय झांझरी, सभापति भ्राता विजय पाण्डे, ब्र.कु. ऊषा बहन तथा अन्य। 6. जबलपुर (कटंगा)- आध्यात्मिक झाँकी का उद्घाटन करते हुए मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के महाधिवक्ता भ्राता रविनन्दन सिंह तथा बहन सुशीला सिंह। साथ में हैं ब्र.कु. विमला बहन तथा अन्य। 7. कटक- 'व्यापार एवं उद्योग में आध्यात्मिकता का महत्त्व' विषयक सम्मेलन में सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. नलिनी बहन। साथ में मंच पर उपस्थित हैं उड़ीसा के अर्थमन्त्री भ्राता डी. प्रफुल्ल घड़ेई, ब्र.कु. कमलेश बहन तथा ब्र.कु. शकु बहन। 8. राँची- आध्यात्मिक झाँकी के उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. निर्मला बहन। साथ में मंच पर विराजमान हैं झारखण्ड उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति भ्राता एन.एन. तिवारी, विकास भारती अध्यक्ष भ्राता अशोक भगत, वी.एस.एन.एल. के महाप्रबन्धक भ्राता एस.एन. सिंह।

संजय की कलम से –

योगानुभूति

योग का अनुभव निराला है। जिसने वह सुख पाया है वही इसे जानता है। इसका आनन्द अवर्णनीय है। इसकी प्राप्ति अतुल है। योगी को क्या प्राप्त नहीं है! जब योगी का मन परमपिता परमात्मा के स्वरूप में समाहित होता है और वह उसके गुणों का रसास्वादन कर रहा होता है तो उसे लगता है कि इस अनुभव के सामने संसार की सभी चीज़ें हेय हैं – यह विचार उसके मन में तब स्वत: आता है जब वह उस उच्च आध्यात्मिक शिखर से थोड़ा नीचे के स्तर पर आता है। उस अवस्था में पाँचों अनुभव एक-साथ होते हैं। ऐसा लगता है कि एक ज़बरदस्त शक्ति-प्रवाह हमारे ऊपर उतर रहा है। वह सूक्ष्म शक्ति हमें एक ज्वाला के समान बना रही है। बस, इतनी शक्ति आ रही है कि अब आत्मा किसी कैद में नहीं है। मालूम होता है कि अब शरीर नहीं रहा है, केवल आत्मा ही है अथवा आत्मा को शरीर का अत्यन्त न्यून ही भान रहा है। आत्मा में शक्ति इतनी भर रही है कि इस दिव्य शक्ति द्वारा समूचे संसार को परिवर्तित किया जा सकता है। साथ-ही-साथ, मन में करुणा का समुद्र उछल रहा होता है। ऐसी भावना का उद्रेक होता है कि सभी को यह अनोखा सुख प्राप्त हो; संसार में कोई भी इससे वंचित न रहे; कोई भी दु:खी न रहे। जी करता है कि ऐसा मार्ग सभी को दिखायें; सभी के लिए यह द्वार खोल दें। हम पर जो शक्ति उतर रही है, इससे सारे संसार को सराबोर कर दें, सभी को इससे सींच डालें। इसी समय ऐसी विचित्र शान्ति और शीतलता का भी अनुभव होता है कि संसार के सभी ख़ज़ाने उसके सामने कुछ नहीं। आत्मा इस शान्ति-रस का प्याले-पर-प्याला पी रही है – ऐसा आभास होता है। नहीं, नहीं, ऐसा महसूस होता है कि हम शान्ति के क्षीर सागर में निमग्न हैं अथवा शान्ति का झरना हम पर झर-झर शान्ति बरसा रहा है। यह भी भाव उत्पन्न होता है कि ऐसी शान्ति इस सारे तप्त संसार में फैल जाए। हम ही इसके स्पन्दन, इसकी किरणें चहुँ ओर प्रसारित करने के लिए माध्यम बन जायें। ऐसा भी लगता है कि जैसे आत्मा पर प्रेम-वृष्टि हो रही है; शिव बाबा अपने अनुपम प्रेम से आत्मा को प्लावित कर रहा है। साथ-साथ एक ऐसे आनन्द का संचार होता है कि, बस, उससे बढ़कर कुछ है ही नहीं। मन करता है कि, बस, इसी का रसास्वादन करते रहें।

शेष पृष्ठ 22 पर

अमृत-सूची

★

सदस्यता शुल्क

भारत	वार्षिक	आजीवन
ज्ञानामृत	60/-	1,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	60/-	1,000/-
विदेश		
ज्ञानामृत	550/-	6,000/-
वर्ल्ड रिन्युअल	550/-	6,000/-

शुल्क केवल **'ज्ञानामृत'** अथवा **'द वर्ल्ड रिन्युअल'** के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर द्वारा भेजने हेतु पता है–सम्पादक, ओमशान्ति प्रिंटिंग प्रेस, ज्ञानामृत भवन, **शान्तिवन – 307510 (आबू रोड) राजस्थान।**

– शुल्क के लिए सम्पर्क करें–
09414423949, 09414154383

सम्पादकीय ....

अकाल मृत्यु, क्यों?

"पनडुब्बी के समुद्र के अन्दर नष्ट हो जाने से 106 वैज्ञानिकों की मौत", "पुल से उतर कर रेल नदी में गिरी, हजारों की मृत्यु", "जहरीली शराब से 500 व्यक्तियों की मृत्यु", "भूकम्प से कई हजार व्यक्ति काल के गाल में", "दो रूसी विमान आसमान में बिखरे, 90 यात्री मरे"।

उपरोक्त और उपरोक्त से भी अधिक घातक समाचार आए दिन संचार माध्यमों के द्वारा जनता तक पहुँचते हैं और आस-पास के परिवेश में घटते भी रहते हैं। आज की भागमभाग जिन्दगी में संवेदनाशून्य होता मानव भले ही ऐसी अनहोनी घटनाओं के बारे में ज्यादा संकल्प नहीं उठाता, प्रतिक्रिया स्वरूप उठने वाले थोड़े-बहुत विचारों को ज्यादा तूल भी नहीं देता परन्तु फिर भी विवेक के किसी कोने में प्रश्नों और जिज्ञासाओं की एक गुप्त लहर अवश्य उठती है कि आखिर ऐसा क्यों होता है? वृद्ध पिता के सामने नौजवान पुत्र क्यों चला जाता है? जिसने अभी किशोरावस्था को छुआ भी नहीं वह हँसता-मुस्कराता बालक अदृश्य क्यों हो जाता है? अपनी किलकारियों से आँगन को महकाने वाला, घुटनों के बल जमीन को मापने वाला बालक मृत्यु का वरण क्यों कर लेता है? जननी की आँखों का तारा, पूरी आँख खोलने से पहले ही संसार को अलविदा क्यों कह देता है? सारे परिवार का आधारभूत व्यक्ति पल में आँखें क्यों मूँद लेता है?

एक समय था जब अप्राकृतिक कार्य अर्थात् वृद्धों की आँखों के सामने नौजवानों की मृत्यु नहीं होती थी। कोई नारी विधवा नहीं होती थी, बालक यतीम नहीं होते थे। अकाल मृत्यु रूपी दैत्य, अपने पाँव समेटे कहीं छिपा रहता था, मानवीय सृष्टि के किसी छोर पर भी उसका काला मुँह कभी किसी को क्षण मात्र के लिए भी नज़र नहीं आता था। अवश्य ही समय ने अर्थात् मानवीय कर्म और भावनाओं ने करवट ली है। मानव के परिवर्तन से ही अन्य प्रकार के परिवर्तन घटित होने लगते हैं। अत: **अकाल मृत्यु के गरमाते बाजार के कारणों की कहानी, दिनों-दिन मानवीय व्यवहार में आई गिरावट की उपज है।**

जैसे-जैसे मानव का पतन होता जाता है, प्रकृति द्वारा स्थापित मर्यादाएँ स्वत: छिन्न-भिन्न होने लगती हैं। नदियाँ किनारा छोड़ देती हैं, पर्वत स्थिरता त्याग देते हैं, आसमान स्वच्छता का परित्याग कर देता है, धरती बोझिल होने लगती है, जल मल में बदल जाता है और मानव अपनी आन्तरिक प्रकृति तथा बाहरी प्रकृति के हाथों का खिलौना अथवा इन दोनों का चाकर भर रह जाता है। मानवीय सम्बन्धों तथा मानव और प्रकृति के आपसी सम्बन्धों पर तमोगुण की ऐसी काली छाया पड़ती है कि जल्दी-जल्दी मृत्यु और जल्दी-जल्दी जन्म की अघोषित विभिषिका सबके सिर पर मण्डराने लगती है।

परमपिता परमात्मा शिव के अनुसार सृष्टि के आदिकाल में दैवीगुण सम्पन्न मनुष्यों की आयु लगभग 150 वर्ष तक होती थी। वृद्धावस्था, रोग और अकाल मृत्यु का वहाँ नाम-निशान नहीं था। फिर त्रेतायुग में भी औसत आयु 100-125 वर्ष होती थी और वृद्धावस्था, रोग तथा अकाल मृत्यु वहाँ भी नदारद थे। द्वापरयुग आते ही मनुष्य देहाभिमान में फँस गए। काम-क्रोध से भरा आचरण करने लगे,

विकारों के वशीभूत हो विकर्म करने लगे, फलस्वरूप, पापों का खाता भरपूर होने लगा और पुण्यों की पूँजी दिनों-दिन क्षीण होने लगी। इसका फल यह निकला कि रोग, अकाल मृत्यु और बुढ़ापा – इन तीनों का वार मानव पर होने लगा। कलियुग आते-आते इनका शिकंजा और अधिक कसता गया। आज तो अधिकतर आत्माएँ भय से आक्रान्त और चिन्ता की चिता में जलती नज़र आती हैं। जैसे वायु के तूफान का एक झोंका या समुद्री तूफान की एक शक्तिशाली लहर दूर-दूर तक के गाँवों को उजाड़ देती है, ध्वस्त कर देती है। उसी प्रकार, अकाल मृत्यु का दैत्य एक साथ कइयों को निगल जाता है। चिन्तकों ने इस स्थिति के लिए ठीक ही कहा है – **'जगत चबेना काल का, कछु मुख में कछु गोद'** अर्थात् यह संसार काल का चारा है। कुछ को उसने मुख में डाल लिया है और कुछ उसकी गोद में है (जो मुख में पहुँचने वाला ही है)। भगवान भी कहते हैं – **"अकाले मृत्यु का तूफान अभी तो शुरू हुआ है। विशेष भारत में सिविल वॉर और प्राकृतिक आपदायें ही हर कल्प परिवर्तन के निमित्त बनते हैं। विदेश की रूप-रेखा अलग प्रकार की है। लेकिन भारत में यही दोनों बातें विशेष निमित्त बनती हैं। दोनों ही साथ-साथ अपना पार्ट बजा रहे हैं।"**

वर्तमान समय, सृष्टि-नाटक के अन्तिम दृश्य का अन्तिम भाग है अर्थात् कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के मध्य का समय है जिसे संगमयुग कहते हैं। संगमयुग में सृष्टि-नाटक का निदेशक परमपिता परमात्मा अवतरित होकर इस कल्प की समाप्ति की घोषणा कर चुका है इसलिए यह समय सभी रंगकर्मियों के वापस घर लौटने का है। परन्तु घर लौटने की आवश्यक शर्त है कि विकर्मों के खाते को चुक्ता करके लौटें। पापों की गठरी समेत कोई परमधाम रूपी परम पावन धाम में प्रवेश नहीं कर सकता। अत: द्वापर से लेकर कलियुग तक का, हरेक आत्मा का पाप-खाता अब अवश्य समाप्त होना ही है। परन्तु समय कम है और पापों का हिसाब ज्यादा है। इसलिए जल्दी-जल्दी दु:खमय जन्म और जल्दी-जल्दी दर्दनाक मृत्यु द्वारा अनेक आत्माओं का पुराना खाता खत्म हो रहा है। वर्तमान समय जन्म और मृत्यु दोनों ही महाकष्टकारी हैं। चारित्रिक गिरावट के कारण आज के मानव की कीमत कौड़ी से भी कम रह गई है। उसका जीवन कीड़े, मच्छर से अधिक गुणवत्ता लिए हुए नहीं है। आज लोग पशु-प्राणियों से सम्बन्ध जोड़ कर खुश होते हैं और अपनी ही जाति से मुँह फिराते जा रहे हैं। कौड़ी तुल्य मानव जीवन का विनाश आज, कीड़े, मक्खी, मच्छर की तरह हो रहा है। जैसे मच्छर आदि मारने के लिए कीटनाशक बनाए जाते हैं इसी प्रकार, मानव को भी सामूहिक मौत देने के बड़े पैने और नए-नए तरीके आविष्कृत किए जा रहे हैं। मच्छर की मृत्यु की तरह ही मानव की अकाल मृत्यु भी अन्य मानवों को संवेदनाशून्य बनाए रखती है। कर्मों के हिसाब को समाप्त कराने के लिए साकार सृष्टि में तीन प्रकार की सजाएँ हैं – **1. तन के रोग, मन का पागलपन, दूसरी आत्मा (भूत) आदि की प्रवेशता। 2. सम्बन्ध-सम्पर्क द्वारा दु:ख की प्राप्ति अर्थात् देह के सम्बन्धी या व्यवसाय से सम्बन्धित व्यक्ति या भिन्न-भिन्न सामाजिक अवसरों पर सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों द्वारा दु:ख की प्राप्ति। 3. प्राकृतिक आपदाओं द्वारा हिसाब-किताब चुक्ता होना।**

वर्तमान समय मानवात्माएँ इन तीनों ही तरीकों से पुराना खाता समाप्त करने में लगी हुई हैं। जीवन-रक्षा के लिए विज्ञान की नई-नई खोजों और रोगों तथा मृत्यु को जीतने के नए-नए दावों के बावजूद अकाल मृत्यु, रोग और वृद्धावस्था नियन्त्रित होने के बजाए तीव्रगति से बढ़ रही

हैं। हम जानते हैं कि लम्बे समय के मानवीय और प्राकृतिक कारणों से वर्तमान में जो स्थितियाँ पैदा हो गई हैं उनको बदलना मानव के हाथ में भले ही न हो पर वह स्वयं को बदल सकता है। अध्यात्म के मार्ग पर चलने वाले पुरुषार्थियों को वर्तमान की विपरीत परिस्थितियों में अपने अन्दर झाँक कर अपनी मन:स्थिति को मजबूत कर लेना चाहिए। उन्हें शुभचिन्तक बन, मास्टर महाकाल बन, शुभकामना की मानसिक सेवा से सभी को सुख-शान्ति की अंचली देनी चाहिए। साथ-ही-साथ उन्हें यह भी चेक करना चाहिए कि उनका पुराना कर्म-ऋण कितना शेष है। इस ऋण की परख तीन बातों से सहज हो सकती है - 1. अपने स्वभाव-संस्कार के विघ्नों के कारण अच्छाई के मार्ग पर जितना चाहते हैं यदि उतना नहीं बढ़ पाते हैं तो यह कर्म-ऋण है। 2. किसी मनुष्य के संग, सम्बन्ध या सम्पर्क के कारण, उसके द्वारा उत्पन्न की गई बाधाओं के कारण यदि हिम्मत-हुल्लास होते भी परवश अनुभव करते हैं और न चाहते भी बन्धन महसूस करते हैं तो यह भी कर्म-ऋण है। 3. किसी भी प्रकार का वातावरण यदि वशीभूत करके उड़ती कला के पंखों को काटता है तो यह भी रहा हुआ कर्म-ऋण है। इन सभी मानसिक ऋणों से मुक्त होने के लिए प्रतिदिन कम-से-कम 4 घण्टा यदि गहन एकाग्रता का अभ्यास किया जाए तो इच्छित फल की प्राप्ति अवश्य हो सकती है।

– ब्रह्माकुमार आत्म प्रकाश

❑

चलो चलें आबू की ओर

– ब्रह्माकुमार अमर, आगरा (छीपीटोला)

चलो चलें आबू की ओर।
आबू पर्वत तीर्थ महान, यहाँ पधारे हैं भगवान,
सुना रहे फिर गीता ज्ञान, हो जाते हैं आत्मविभोर।
चलो चलें ....

खुलती यहाँ ग्रन्थियाँ मन की, हो थकान दूर सब तन की,
सच्ची सद्‌गति है जीवन की, रहे नाचता मन का मोर।
चलो चलें ....

स्वयं प्रभु जब देते साथ, इससे बड़ी न कोई बात,
करते रहें मिलन-मुलाकात, जुड़े प्रीती ज्यों चन्द्र-चकोर।
चलो चलें ....

बनते यहाँ गुणों की खान, करते अतीन्द्रिय सुख का रसपान,
इस सम दूजा नहीं स्थान, फिर ना आएगा यह दौर।
चलो चलें ....

मात-पिता का पावन देश, मिटें यहाँ जन्मों के क्लेश,
प्रभु निराकार, साकारी वेष, मन-बुद्धि की जोड़ें डोर।
चलो चलें ....

इस जग की कोई भी आशा, देती सबको झूठा दिलासा,
यह तो है माया का पासा, मिलता जिसका कहीं न छोर।
चलो चलें ....

प्रभु को हमसे कुछ न चाहिए, मनचाहा वरदान पाइए,
खुशी-खुशी जीवन बिताइए, गफलत की, तो मिले न ठौर।
चलो चलें ....

सम्मान के स्वर

– ब्रह्माकुमार सतीश, आबू पर्वत

आकाश की ऊँचाइयाँ छूने के प्रयास में व्यक्ति आज धरती से अपनी जड़ों से कटता जा रहा है। बहुत कुछ पाने के प्रयत्न में अपनी मौलिकता, आत्मीयता व सहजता से वंचित हो रहा है। वैश्वीकरण (Globalisation) के युग में आज विश्व एक छोटा-सा गांव बन गया है, सूचना व प्रौद्योगिकी में अपूर्व प्रगति हुई है, विज्ञान अपनी नित्य नई खोजों व उपलब्धियों पर गर्वित होता हुआ मानवता का उपहास कर रहा है। सामाजिक सोच तथा प्रचलित मान्यताओं एवं धारणाओं में अद्भुत परिवर्तन आया है। संसार की दूरियां मिटा ली गई हैं किन्तु दिलों की दूरियां बढ़ गई हैं। सबसे बड़ी क्षति हुई है मानवीय संवेदनाओं व सम्बन्धों की जो शुष्कप्राय: होते जा रहे हैं। व्यक्ति, व्यक्ति को पहचानने के लिए तैयार नहीं है। वह आत्मविस्मृत-सा अन्यमनस्क होकर किसी तरह से जी रहा है। जीवन से स्नेह, सच्चाई, सम्मान, सेवा, दया, करुणा व परोपकार जैसे मूल्य तिरोहित हो गए हैं। तभी तो कहा है –

इस दौरे तरक्की के
अन्दाज़ निराले हैं।
जेहनों में अंधेरे हैं,
सड़कों पे उजाले हैं।।

सम्मान दो, सम्मान लो

मूल्यों के पतन के साथ आज मनुष्य मूल्यहीन बनता जा रहा है। वस्तुओं के मूल्यों में वृद्धि हो रही है किन्तु आदमी सस्ता होता जा रहा है। दो तरह के लोग दिखाई पड़ते हैं। एक तो अतिविशिष्ट और माननीय और दूसरे हैं जिनकी कोई इज्ज़त नहीं, जो मानरहित जीवन जी रहे हैं। उन्हें तो दो जून रोटी का जुगाड़ करना है, वह चाहे ऐसे मिले या वैसे। फिर भी समाज का प्रत्येक व्यक्ति सम्मानित होकर जीना चाहता है। यह सम्मान की भूख आत्मा की स्वाभाविक स्थिति है। नाम, मान और शान की चाह सभी को होती है किन्तु इसकी प्राप्ति के लिए जब व्यक्ति कम परिश्रम व बिना मेहनत के छोटा रास्ता चुन लेता है तब वह उपहास का पात्र बन जाता है। पात्रता के बिना पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति अपयशकारी है। सम्मान से जीयें, रहें, यह सभी का मौलिक अधिकार है लेकिन लेने से पहले देना सीखें। सम्मान दो, सम्मान लो (Give respect and get respect), सम्मान देने में ही लेना है। किन्तु वस्तुस्थिति यह है कि आज हम लेना तो चाहते हैं परन्तु देना नहीं। इसके लिए हमें यह दैवी-संस्कृति अपनानी होगी कि हम सबको सम्मान दें।

परस्पर घटता सम्मान, कारण अभिमान

आज चारों ओर नज़र दौड़ाएं तो पाएंगे कि दु:ख, तनाव व समस्याओं के मूल में व्यक्ति की अपनी ही नकारात्मक सोच है। असम्मान की भावना है, उसकी अहंकार से भरी दम्भी प्रवृत्ति है। अहंकार का परदा किसी की अच्छाइयों को देखने नहीं देता। अभिमान से तना सिर किसी की भी महानताओं के आगे झुकना नहीं चाहता और अपमानित होकर चोट खाये सर्प के फण की तरह उठकर फुफकारता रहता है या फिर बन्दरों की तरह हाथी को भी घुर्र-घुर्र करता रहता है।

सर्वोत्कृष्ट संस्कृति – सम्मान की संस्कृति

भारतीय गौरवशाली प्राचीन संस्कृति अध्यात्म प्रधान रही है जिसमें व्यक्ति के जन्म से लेकर मृत्यु-पर्यंत सभी के प्रति आदर व सम्मान की भावना समाहित है। बाल्यकाल में माता-पिता व अभिभावकों के प्रति सम्मान, शिक्षक व गुरुजनों के प्रति सम्मान, पारिवारिक व सामाजिक सम्बन्धों के प्रति सम्मान के अनेक ज्वलन्त उदाहरण मिलते हैं। भारतवर्ष को महिमा मंडित करती पंक्तियां कहती हैं – इन्सान तो क्या पत्थर भी पूजे जाते हैं। जहाँ पर बच्चों में महात्मा अथवा ईश्वर के दर्शन होते हैं। धरती को मां और आकाश को पिता तुल्य माना जाता है। माता और पिता की

सेवा में सभी तीर्थों व धामों के पुण्य पाने की फलश्रुति है। अतिथि को देवता तथा गुरु को ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश्वर के समकक्ष मानते हैं। नारी को देवी व लक्ष्मी पद मिला है। नर में नारायण के दर्शन होते हैं, यहां तक कि प्रकृति के पांचों तत्वों को देवतुल्य मानकर आराधना होती है और परमात्मा के प्रति असीम श्रद्धा व्यक्त करते हुए कहा जाता है – पर्वतों को दवात, सागर को स्याही, धरती को कागज और कल्पवृक्ष की कलमें बना कर विद्या की देवी तीनों कालों में लिखे तो भी परमेश्वर के गुणों का अन्त नहीं पा सकती। किन्तु इसे विडम्बना ही कहेंगे कि आज व्यक्ति इस महान धारणा की विरासत को विस्मृत कर चुका है।

किसे सम्मान दें और क्यों?

प्राय: सम्मान देने वाले का तो सभी सम्मान करते हैं किन्तु अपमान करने वाले, अहित चाहने वाले के प्रति भी सदा शुभभावना व आदर भाव रखना, यह आसान नहीं है। जबकि ऐसी आत्मा के प्रति भी कल्याण की दृष्टि रख उसे क्षमा करना, उस पर उपकार करना – यही यथार्थ पुरुषार्थ है, आध्यात्मिक साधना व सच्ची सेवा है। यहां प्रश्न उठ सकता है कि क्या अवगुणी, अनाचारी एवं पापी के प्रति भी सम्मान का भाव रखना अनुचित नहीं है? क्या ऐसे लोगों को भी इज्ज़त देना उनकी आदतों को बढ़ावा देना नहीं है? यहां हमें समझ लेना चाहिए कि दुर्गुणी के प्रति दुर्भावनाओं से तो उसका परिवर्तन होगा ही नहीं, और ही उसका और अपना भी अहित ही होगा। दुर्भावनाएं तो दुर्गुणों पर आग में घी का काम करेंगी। शुभ भावनाएं रखने का अर्थ है कि अवगुणों रूपी भूतों के वशीभूत हुई आत्मा मुक्त हो और उसका कल्याण हो। ऐसे व्यक्तियों के प्रति सम्मान भाव रखने का अर्थ है– उनके दोषों का चिन्तन न करते हुए सर्वथा अप्रभावित रह अपनी श्रेष्ठ स्थिति में स्थित रहना। इसी परिप्रेक्ष्य में कहा गया है कि पाप से घृणा करो, पापी से नहीं (Hate the sin not the sinner)।

स्वमानधारी ही सम्मानधारी

स्वमानधारी व आत्माभिमानी की दृष्टि, वृत्ति व कृति से सम्मान की शीतल फुहारें बरसती हैं अन्यथा आत्मिक दृष्टि व आत्मीयता के बिना अभिमान की ही दुर्गन्ध मिलेगी। स्वमान के बिना बोले गए बोल तो ऐसे प्रतीत होंगे मानो विष भरे घड़े के मुख पर दुग्ध रखा गया हो। किन्तु स्वमान व आत्माभिमान का सम्यक् स्वरूप जाने बिना इसका देहाभिमान में परिवर्तन होना सम्भव है। स्व अर्थात् आत्मा के परिचय के साथ स्वरूप, स्वधर्म, स्वकर्म, स्वदेश एवं स्वभाव में स्थित रहना ही स्वमान में टिकना है। सच्चे अर्थों में यही आध्यात्मिक होना है। स्वमानधारी ही सभी को यथार्थ सम्मान दे सकता है।

जहाँ श्रद्धा, वहाँ सम्मान

किसी के प्रति आदर व सत्कार की भावना रखना, उसे मान देना व महत्त्वपूर्ण समझना, उसकी विशेषताओं को सच्चे मन से स्वीकारना अथवा खूबियों की कद्र करना – यही सम्मान है। इसे ही श्रद्धा भावना या सद्भावना-शुभ भावना कहते हैं। माननीय के लिए मन से व्यक्ति नतमस्तक हो जाता है। अभिवादन में श्रद्धा से शीश झुक जाता है। वास्तव में सम्मान का जन्म श्रद्धा से होता है और श्रद्धा का निर्माण सद्भावनाएं करती हैं। जबकि सद्भावना व शुभ भावना ज्ञानवान व्यक्ति के हृदय से उपजती हैं। बिना ज्ञान के श्रद्धा निरन्तर नहीं रह पाती अथवा कभी-कभी अन्धश्रद्धा में परिवर्तित हो जाती है। हम सब जानते हैं कि ज्ञान एवं गुणों के स्त्रोत एक ही परमात्मा हैं। वे सबसे अधिक सम्माननीय हैं क्योंकि वही ज्ञान दाता, दु:खहर्त्ता-सुखकर्त्ता, परम कल्याण-कारी, सर्वोपकारी, अनन्त शक्तिवान, सर्व पर दया करने वाले, भाग्यविधाता, गति-सद्गति दाता तथा सभी पापों व कष्टों से मुक्त करने वाले हैं। उनकी दृष्टि में सभी महान हैं क्योंकि सभी उनकी ही सन्तान हैं। जैसे पिता अपनी रचना की खामियों व खूबियों को बखूबी जानता है, फिर

भी सदैव उसके कल्याण की कामना करता है, अनेक दोष होते हुए भी उसके प्रति स्नेह व सम्मान रखता है, ठीक वैसे ही परमात्मा को अपनी सन्तान अति प्रिय है, सम्माननीय है। उनकी सन्तान होने के नाते हमें भी परस्पर सबके प्रति सम्मान की भावना रखनी चाहिए।

समय की पुकार – सबका करें सत्कार

वास्तव में सम्मान वही दे सकता है जो आत्मसम्मान की सम्पत्ति से सम्पन्न है, विशाल हृदयी है, किसी की कमजोरी व बुराइयों को हृदय पर नहीं रखता। क्षमाशील, उदार व सहिष्णु ही सबको सम्मान दे सकता है। सम्मान में अद्भुत शक्ति व क्षमता है जो शत्रु को भी मित्र बना सकता है। सिकन्दर ने राजा पोरस को हराकर जब कैद कर लिया और उससे पूछा कि आपके साथ कैसा व्यवहार किया जाए, तो पोरस ने कहा था कि जैसा एक राजा दूसरे राजा के साथ करता है। ऐसा उत्तर सुन सिकन्दर ने उसे मुक्त कर दिया। सम्मान की दृष्टि वाले में ईश्वरीय गुण के दर्शन होते हैं। यही विशेषता जीवन जीने की कला सिखाती है, सम्बन्धों में मधुरता की महक भर देती है, सफलता व उन्नति के द्वार खोल देती है तथा सर्व का प्रिय व प्रभुप्रिय बना देती है। अभिमानी पर विजय पाने का यही तो अद्भुत शस्त्र है।

आध्यात्मिक साधकों का विशेष उत्तरदायित्व

सामान्य जनों के अलावा सम्मानपूर्ण व्यवहार करने की अपेक्षा उनसे अधिक की जा सकती है जो आध्यात्मिक हैं अथवा आध्यात्मिक संगठनों से जुड़े हैं, जो आत्म परिवर्तन से विश्व परिवर्तन के लक्ष्यधारी हैं, जिनको अपना जीवन सभी के लिए आदर्श बनाना है तथा जिन्होंने सभी के कल्याण का संकल्प लिया हो और अपना सब कुछ पुरुषार्थ व परमार्थ के पथ में समर्पण कर दिया हो। उन्हें अग्रलिखित बातों पर विशेष ध्यान देना होगा।

ईश्वर के प्रति सम्मान अर्थात् ईश्वरीय ज्ञान, ईश्वरीय महावाक्यों (मुरली), ईश्वरीय नियमों, मर्यादाओं व ईश्वरीय आज्ञा (श्रीमत) का पालन, वरिष्ठ जनों का, विशेष पुरुषार्थियों व बुजुर्गों का सम्मान, मातृशक्ति का सम्मान। क्योंकि परमपिता शिव परमात्मा व प्रजापिता पिताश्री ब्रह्मा ने माताओं, कन्याओं को भरपूर सम्मान दिया, ईश्वरीय सेवाओं के प्रति सम्मान अर्थात् यज्ञ सेवा अर्थ अपना संकल्प, वचन, कर्म, श्वास, संबंध सब समर्पण।

सम्मान की अभिव्यक्ति के इन्द्रधनुषी रंग

1. ईश्वरीय ज्ञान के गहन चिन्तन व राजयोग के अभ्यास से प्राप्त निर्दोष दृष्टि व नि:स्वार्थ वृत्ति से सम्मान का सही स्वरूप प्रगट होता है। **2.** शुभ भावनाओं के शक्तिशाली प्रकम्पन निर्बाध रूप से बिखरने दें। सभी सुखी हों, सबका भला हो, सभी अपने हैं, सभी महान हैं, सभी ईश्वरीय स्नेह के पात्र हैं – यही कल्याण की कामना हो। **3.** वाणी से मधुर, निश्छल बोल बोलें, सम्मानयुक्त सम्बोधनों का प्रयोग करें। **4.** ईश्वरीय महावाक्यों में जिस तरह 'मीठे बच्चे' की अनुगूँज है, अनेक सम्मान भरे सम्बोधन, उपाधियाँ, अलंकार हैं, ऐसा उदाहरण तो अन्यत्र दुर्लभ है। **5.** यूँ तो सम्मान प्रगट करने के लिए हृदय की सच्चाई पर्याप्त है फिर भी आतिथ्य में, वार्तालाप में, दैनिक व्यवहार में शिष्टाचार बहुत जरूरी है क्योंकि हम अपने बोल से नहीं, कर्मों से पहचाने जाते हैं। **6.** संगठन में एकता, सद्भावना (Harmony) एवं गतिशीलता बनी रहे, इसके लिए अपने अहम् विचारों की भी बलि देने के लिए तैयार रहें। **7.** अभिवादन करना, भूलों के लिए क्षमा मांग लेना, महत्त्वपूर्ण अवसरों पर उपहार देना, बधाइयां देना तथा विनम्रतापूर्ण व्यवहार करना – सम्मान की अभिव्यक्ति के सरल सूत्र हैं।

★★★

'पत्र' सम्पादक के नाम



'ज्ञानामृत' के अक्टूबर 04 के अंक में "दानव जैसी आत्मा को देव बना दिया" अनुभव पढ़ा। मेरे जीवन पर इस लेख का जो श्रेष्ठ प्रभाव हुआ है उसे शब्दों में प्रकट नहीं कर सकता। मेरे डाँवाँडोल तथा अधपके मन पर अनुभवयुक्त लेखों का बहुत अच्छा असर पड़ता है। सम्पूर्ण रूप से बाबा का बन जाने पर सभी आत्माएँ इस अनुभव के लेखक जैसी पवित्र और साक्षी बन सकती हैं। लेखक के जीवनानुभव से यह सिद्ध होता है कि बुरे से बुरा आदमी भी बाबा का सर्वोत्तम लाडला बच्चा बन सकता है। बुरे को भला बनाने में यह लेख बहुत प्रभावकारी है। ऐसे लेखों से बहुतों के जीवन सुधर सकते हैं। इस अनुभवयुक्त लेख के लेखक को, आपको तथा करुणा के सागर बाबा को कोटि-कोटि धन्यवाद।

— ब्रह्माकुमार बंडप्पा
खूबा, हुमनाबाद, कर्नाटक

अक्टूबर 04 के अंक में सम्पादकीय "ऐशो-आराम की भ्रामक धारणा" पढ़ कर एक सटीक साहित्यिक चित्र मानस पटल पर उभर कर आया है। इसे पढ़ कर मन प्रफुल्लित तो हुआ ही है साथ-ही-साथ "नया नौ दिन और पुराना सौ दिन" की कहावत से जो आत्मानुभूति कराई है, वह भी अपने आप में एक अनूठी मिसाल है। समयानुसार यह अन्धों के लिए आईने सम साहित्य है। जिसने भी इसे मन से पढ़ा है उसने परमप्रिय परमात्मा शिव बाबा से योग लगा कर सच्चा ऐश, सच्चा सुख-चैन प्राप्त करके राहत भरी श्वास अवश्य ही ली होगी। आत्मानुभूति कराने हेतु आपको एवं परमात्मा शिव को भी कोटीश: धन्यवाद।

— ब्रह्माकुमार सुदेश, लखनऊ

ब्रह्माकुमारी विश्व विद्यालय ने 'ज्ञानामृत' के माध्यम से घर-घर में ज्ञान का सागर पहुँचाने का प्रयास किया है। पुस्तक लघु आकार की होते हुए भी 'गागर में सागर' की कहावत को चरितार्थ कर रही है। 'ज्ञानामृत' के प्रकाशन व उच्च कोटि की प्रेरणादायक सामग्री के लिए समूचा सम्पादक मण्डल बधाई व धन्यवाद का पात्र है। सही मायने में यह आज के समय की माँग को देखते हुए युवा पीढ़ी की पथप्रदर्शक, अभिभावक, शिक्षक व मार्ग-दर्शक है। अक्टूबर अंक में 'सच्ची विजय दशमी' आलेख पढ़ा। लेखक ने दशहरे की हर विवेचना बड़े ज्ञानवर्धक और प्रेरणादायी ढंग से कर हर बात का खुलासा किया है। 'निर्भय कैसे बनें', 'दानव जैसी आत्मा को देव बना दिया', 'दोषी कौन?', 'पश्चाताप', 'ज्ञान-पद' जैसी रचनाएँ काफी अच्छी लगी व इन्हें बार-बार पढ़ने का मन करता है। शेष रचनाएँ भी एक से बढ़ कर एक थीं।

— सुनील कुमार माथुर,
मेड़ता सिटी

अक्टूबर अंक में 'दिव्यानुभूति' लेख पढ़ने का अनुभव बड़ा ही सुखद था। थोड़ी-सी किन्तु प्रभावशाली लिखत में मधुबन की सैर करने का अवसर मिला। हिन्दी में संस्कृत के शब्दों का मुक्तहस्त प्रयोग बड़ा अच्छा लगा। लेखक ने बात को चित्रांकित करने व सटीक तरीके से कहने के लिए लेखन को खूब सँवार कर चार चाँद लगाये। ऐसी अदम्य क्षमता का प्रयोग ईश्वरीय सेवा में करने से वे बहुतों की दुआओं के पात्र तो बन ही गए।

— ब्रह्माकुमार रामचरण,
कोलकाता

***

पुरुषोत्तम संगमयुग और सृष्टि का भूगोल

– ब्रह्माकुमार रमेश, गामदेवी (मुम्बई)

परमपिता परमात्मा शिव द्वारा स्थापित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय में विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु आध्यात्मिक शिक्षा दी जाती है। यही शिक्षा इसे शास्त्र आदि सिखाने वाली पाठशालाओं से भिन्न बनाती है। शिव परमात्मा परमपिता, परमशिक्षक और परम सत्गुरु भी हैं और वे हर विषय का आदि-मध्य-अन्त सिखाते हैं जबकि शास्त्रों की पढ़ाई में कई बार भूगोल की पढ़ाई नहीं होती। हमें पाठ्य पुस्तकों में शेक्सपियर का 'दि ट्रेजडी ऑफ मैकबेथ' नाटक पढ़ाया जाता था जिसमें लिखा था कि यह सृष्टि एक रंगमंच (stage) है और उसमें हम सभी पात्र (actor) हैं। मैं अपने शिक्षकों से पूछता था कि यदि सृष्टि रंगमंच है तो यह हमारा घर नहीं हुआ, तो हमारा घर कहाँ है, जहाँ से हम इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अपनी भूमिका अदा करने के लिए आते हैं? परन्तु उसका जवाब नहीं मिला। इसी प्रकार, सांख्यशास्त्र में हमें यह सिखाया जाता था कि यह सृष्टि परमात्मा, पुरुष और प्रकृति का खेल है और जब जरूरत पड़ती है तब कई बार परमात्मा भी सृष्टि पर अवतरित होते हैं या कई बार विशेष कार्य सम्पन्न करने के लिए श्रेष्ठ अनुभवी आत्मा को भेजते हैं। जब तक वह अनुभवी आत्मा इस रंगमंच पर नहीं आती तब तक वह परमात्मा के सान्निध्य में रहती है और ऐसे ही जब कोई आत्मा कर्मातीत बन जाती है, तो वह ज्योति में न समा कर परमात्मा ज्योति के नजदीक जाकर विराजमान होती है। तब मैं पूछता था कि वह परमज्योति और उनकी साथी आत्माएँ कहाँ रहती हैं और वहाँ का भूगोल क्या है? तैतरियोपनिषद् में हमें सिखाया गया कि दो पंछी एक डाल पर बैठे थे। एक का नाम था 'शिव' और दूसरे का नाम था 'जीव'। जीव डाली से उड़ कर इस पृथ्वी पर खेलने के लिए आता है और शिव उसी डाली पर बैठे-बैठे, सृष्टि पर जीव की लीला को देखते रहते हैं। समय हो जाने पर एक माँ की तरह, शिव अपने बच्चे जीव को वापिस घर ले आते हैं। तब मैं पूछता था कि वह डाल कहाँ है और वापिस घर जाने का समय कौन-सा है? क्या शिव एक ही जीव को वापिस ले जाने के लिए आते हैं या एक से ज्यादा या सर्व जीवों को वापिस घर ले जाते हैं? लेकिन इन प्रश्नों का जवाब नहीं मिलता था।

ऐसे ही शंकराचार्य के अद्वैत सिद्धांत में पढ़ाया जाता है कि परमात्मा एक ज्योति है और उसी से हम ज्योतिर्बिंदु आत्माएँ निकलती हैं। सम्पूर्ण बनने पर हम उसी महाज्योति में विलीन हो जायेंगे। यहाँ भी मेरा प्रश्न था कि उस ज्योति का निवास स्थान कहाँ है? जब हम अवतारवाद पढ़ते थे तो हमारा प्रश्न था कि परमात्मा जब यहाँ अवतरित होते हैं तो उससे पहले कहाँ रहते हैं अर्थात् उनका पता क्या है? इस तरह कठोपनिषद् के नचिकेता और यमराज के संवाद का स्थान कहाँ है, ये प्रश्न उठते थे।

इन सब प्रश्नों का उत्तर तब मिला जब हमने इस विश्व विद्यालय में कल्पवृक्ष के चित्र को और तीन लोक के चित्र को समझा। तब जाना कि जिसे परमधाम, शान्तिधाम, ब्रह्मलोक, निर्वाणधाम आदि-आदि कहते हैं वहाँ के हम रहने वाले हैं। गीता के 15वें अध्याय में परमधाम के बारे में लिखा है कि जहाँ सूर्य, चंद्रमा की रोशनी नहीं पहुँचती है, जहाँ जाने के बाद कोई वापिस नहीं

आता है, वह मेरा परमधाम है। गीता के ऊपर अनेक विद्वानों ने टीका-ग्रंथ लिखे हैं। मैंने परमधाम शब्द की परिभाषा जानने की कोशिश की परन्तु किसी भी विद्वान लेखक ने नहीं बताई केवल साधारण भाषांतर ही किया।

परमात्मा के वर्णित दस अवतारों में से एक अवतार है वामन अवतार। वामन रूपी परमात्मा ने बली राजा से साढ़े तीन पैर पृथ्वी दान में माँगी थी। बली राजा द्वारा हाँ किए जाने पर वामन परमात्मा ने विराट बन कर तीन पैर पृथ्वी में स्वर्ग, पाताल और सारी सृष्टि को माप लिया और फिर आधे पाँव को बली राजा के सिर पर रख कर उसे दबा कर, पृथ्वी के नीचे पाताल में भेज दिया। इस कहानी के आधार से पाताल का स्थान पृथ्वी के नीचे है परन्तु विज्ञान से हमें मालूम पड़ता है कि पृथ्वी के नीचे कोई पाताल नहीं है। ऐसे ही महाभारत में नदी के नीचे जो नागलोक होने का वर्णन है उसे आज का विज्ञान मानने के लिए तैयार नहीं है। ऐसे ही बचपन में हमने एक नाटक में पढ़ा था कि श्री कृष्ण ने 16108 रानियाँ बनाने का जो पाप किया था उसकी सजा भुगतने के लिए उन्हें सातवें पाताल में भेज दिया गया परन्तु ऐसे सातवें पाताल का भूगोल आज की दुनिया को मालूम नहीं है। ऐसे समय में परमात्मा शिव द्वारा बताया गया सृष्टि चक्र का वास्तविक भूगोल अर्थात् त्रिलोक का ज्ञान बहुत ही प्रेरणादायक है जिससे सभी प्रश्नों का जवाब मिल जाता है।

परमात्मा त्रिलोक के ज्ञान द्वारा बताते हैं कि परमधाम छठा महतत्व है और वहाँ सुनहरा लाल दिव्य प्रकाश है जिसका योग में कइयों को साक्षात्कार होता है। परमधाम हम आत्माओं का घर है और सृष्टि रंगमंच या मुसाफिरखाना है। परमधाम में सभी आत्माएँ रहती हैं और अपने समय पर सृष्टि रंगमंच पर भूमिका अदा करने आती हैं। इससे सिद्ध होता है कि आत्माएँ परमज्योति में समाती नहीं है परन्तु उसके साथ घर में रहती हैं। द्वापरयुग के बाद विभिन्न धर्मस्थापक अपने-अपने समय पर आकर अपने धर्म की स्थापना करते हैं और उनकी साथी आत्माएँ आकर धर्म की वृद्धि करती हैं। असली घर का यह ज्ञान मिलने से मालूम पड़ता है कि शिव परमात्मा हम आत्माओं को वापिस ले जाने के लिए इस स्थूल दुनिया में आते हैं और ईश्वरीय ज्ञान तथा राजयोग के द्वारा आत्माओं को पावन बना कर विश्व-परिवर्तन के कार्य में मददगार बनाते हैं। इस प्रकार, तैतरियोपनिषद् के प्रश्न का उत्तर भी हमें मिल जाता है।

जब कोई बड़ा निर्माण कार्य (construction) करना होता है तब उसके नजदीक ही निर्माण कार्यालय खोल दिया जाता है जिससे निर्माण कार्य सहज हो जाता है। उसी प्रकार, रचयिता त्रिमूर्ति परमात्मा शिव भी ब्रह्मा, विष्णु और शंकर के द्वारा इस सृष्टि परिवर्तन का कार्य करते हैं, तब परमधाम और सृष्टि के बीच में ब्रह्मापुरी, विष्णुपुरी आदि पुरियों का निर्माण करते हैं जिससे नवविश्व निर्माण का कार्य सहज हो जाता है। इन तीन पुरियों को 'सूक्ष्मलोक' भी कहते हैं जिसका साक्षात्कार हमारी कई संदेशी बहनों को होता है और वहाँ जाकर वे परमपिता को भोग आदि लगाती हैं तथा संदेश की लेन-देन भी करती हैं। सृष्टि-परिवर्तन के अंतिम समय पर पहले यहाँ ही सभी आत्माएँ एकत्रित होंगी और फिर परमधाम वापिस जाने का द्वार खुलेगा और आत्माएँ घर वापिस जायेंगी। इस प्रकार से देखा जाए तो सूक्ष्मवतन, परमधाम जाने के रास्ते में विश्राम स्थान है। उसमें भी ब्रह्मापुरी ऐसा स्थान है जहाँ पर विनाश के पूर्व सम्पूर्ण बनने वाली आत्माएँ रहती हैं जैसे कि आदरणीय ब्रह्मा बाबा जो विनाश से पहले सम्पूर्ण बन गए। त्रिलोक भूगोल के बिना आज की स्थूल दुनिया का भूगोल अधूरा (incomplete) है, इसलिए त्रिलोक के भूगोल का ज्ञान विद्यार्थियों को विद्यार्थी जीवन में ही मिल जाए तो वह नास्तिक के बजाए आस्तिक अवश्य बन सकते हैं।

प्रतिक्रिया से बचें

– हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. सतीश गुप्ता, ग्लोबल हॉस्पिटल, शान्तिवन

आत्मा का मुख्य गुण है सत्यता और सभ्यता। हम सभी चाहते हैं कि हमारे आपसी व्यवहार में उदारता, मधुरता, अन्तर्मुखता आदि सभी दैवीगुण हों तथा कार्य व्यवहार में भी ये सभी गुण हर पल परिलक्षित हों। जब हम राजयोग का अभ्यास कर रहे होते हैं तो लगता है कि सभी गुण हमारे में हैं परन्तु जब कार्य में आते हैं तो वो रूहाब कम हो जाता है। गहराई से विचार करें तो इसका कारण समझ में आता है। उदाहरण के लिए 220 वॉल्ट की बिजली से टी.वी., ए.सी., कूलर, पंखा आदि अब उपकरण चलते हैं किन्तु यदि बिजली केवल 50 वॉल्ट ही हो तो केवल बल्ब जलेंगे और वे भी बहुत धीमे प्रकाश के साथ। कूलर, ए.सी. आदि तो चलेंगे ही नहीं। यदि हम बिजली की तुलना आत्मिक शक्ति से करें और बिजली के विभिन्न उपकरणों की तुलना विभिन्न दैवी गुणों से करें तो हम समझ सकते हैं कि आत्मिक शक्ति की कमी के कारण ही दैवी गुण व्यवहार में नहीं आ पाते हैं।

हमारे में 'लाइफ फोर्स' एनर्जी (energy, ऊर्जा) होती है। आम आदमी की यह एनर्जी 7 हज़ार के लगभग होती है। यदि यह 14 हज़ार से कम है तो हम दूसरों के प्रभाव में आ जाते हैं या लगाव, झुकाव, टकराव में फँसे रहते हैं। यदि 14 हज़ार से अधिक एनर्जी जमा कर लेते हैं तो हम पर दूसरी आत्मा का असर नहीं होता। फरिश्ता बनने के लिए 25 हज़ार तक की लाइफ फोर्स एनर्जी चाहिए, 14 हज़ार की एनर्जी पर थोड़े-थोड़े गुण दिखाई देने लगते हैं। इतनी आन्तरिक शक्ति होने पर हम सत्य बोलने में डरेंगे नहीं, सत्यता पर कायम रह सकेंगे। सत्यता का अर्थ है – अपनी अनादि-आदि सतोप्रधान स्थिति में स्थित होकर हर संकल्प, बोल, कर्म करना और सम्बन्ध-सम्पर्क में आना। दूसरों के साथ बात करते यदि देहभान की स्थिति है तो इसका कारण है कि हममें आत्मिक-शक्ति की कमी है। शिव बाबा कहते हैं कि जो अन्दर होगा वही बाहर निकलेगा।

विकर्म विनाश होते हैं बीजरूप स्थिति में। उदाहरण के लिए कच्चा दूध यदि खुला रखा है तो उसमें बहुत कीटाणु पैदा हो जाते हैं। कीटाणु रहित करने के लिए उसे उबाला जाता है। इसके लिए हम भगोने में दूध डाल कर गैस पर रखेंगे पर तुरन्त नहीं उतारेंगे। तुरन्त उतार लेने से कीटाणु मरेंगे नहीं। दूध गर्म होकर जब उबाल आ जाएगा तब हम आश्वस्त होंगे कि अब कीटाणु मर गए। योग में भी ऐसे है। हमें पिछले 63 जन्मों से विकर्म करने का अभ्यास है। परन्तु इस संगमयुगी जीवन के कुछ साल ही मिले हैं उन विकर्मों को समूल नष्ट करने के लिए। केवल गिने-चुने पदमापदम भाग्यशाली भाई-बहनों को ही पुरुषार्थ के लिए संगमयुग का सारा का सारा समय मिल पाया है, शेष को कुल में से कुछ अवधि ही मिल पाई है।

तो हमें क्या करना चाहिए? सरल-सा पुरुषार्थ है चार्ट लिखना। गलतियाँ हम सभी से होती हैं। गलती करना, गुस्सा करना, उदास होना, जल्दी करना – इन सब वृत्तियों के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ती। ये सब स्वत: हो जाते हैं। ये निचले मस्तिष्क की बातें हैं। हमारे दो मस्तिष्क हैं। एक ऊपरी और दूसरा नीचे का। जैसे हम कुत्ते को थोड़ा-सा छू देते हैं तो एकदम भौंक देता है। गधे को थोड़ा-सा कुछ करो तो एकदम दुलत्ती मार देता है। यह है उनकी तुरन्त प्रतिक्रिया, जो निचले मस्तिष्क के प्रयोग से होती है। लेकिन इन्सान के पास ऊपर वाला दिमाग भी है। इसका कार्य है जमा, घटा करना, विवेचन करना। देहभान आने पर ऊपर वाला दिमाग प्रयोग नहीं

होता है और आत्मा नीचे वाले मस्तिष्क के आधार पर तुरन्त प्रतिक्रिया कर देती है। काम विकार क्या है? कोई सुन्दर दिखा तो तुरन्त उसके बारे में विचार चल पड़े। यह है तुरन्त प्रतिक्रिया। यह नहीं सोचा कि जो सुन्दर दिख रहा है उसकी वास्तविकता क्या है? एक मि.मी. चमड़ी के नीचे क्या है? माँस। तो क्या मुझे निकृष्ट चीज माँस की इच्छा है? इसी प्रकार, छोटी-सी बात भी सहन नहीं होती है। हम तुरन्त क्रोध भरी प्रतिक्रिया कर देते हैं। मनपसन्द चीज देखी और तुरन्त इकट्ठा करने का भाव उत्पन्न हो गया, यह लोभ है। मोह क्या है – जो मेरी मदद करते हैं वे मेरे ही साथ रहें, दूसरों से बात न करें। अपने चेहरे या पद को देख कर अपने को दूसरों से ऊँचा और अच्छा समझने लगे, यह अहंकार हो गया। परन्तु ऊपरी दिमाग का प्रयोग हमें विश्लेषण के लिए प्रेरित करता है कि सोचो, इसकी वास्तविकता क्या है, क्या यह मेरे लायक है, क्या मुझे ऐसा करना चाहिए?

अगर हम प्रतिक्रिया न करें तो हमारी एनर्जी कम नहीं होगी। एनर्जी कम होती है तीन बातों से, जो हैं – लगाव, झुकाव और टकराव। चार रस्सियाँ भी हमें बाँधती हैं, जो हैं – देह, देह के संबंध, देह के स्वभाव-संस्कार और देह के पदार्थ। ब्रह्मा बाबा ने सबसे पहले देह को भूलने का प्रयास किया। ब्रह्मा बाबा के तन में शिव बाबा ने सन् 1936 में प्रवेश किया परन्तु सन् 1930 से ही उनमें वैराग्य की भावना आ गई थी। स्वयं को आत्मा समझने से अपने-आप ही देह के संबंधों की रस्सी कट जाती है। कई बार किसी के साथ सामंजस्य नहीं बैठ पाता है। इसका कारण है कि हम चारों युगों में किसी-न-किसी संबंध से साथ में रहे हैं। उन संबंधों में हमने देह अभिमानवश काफी गलतियाँ की हुई हैं। चूँकि यह आखिरी जन्म है इसलिए इस जन्म में वे गलतियाँ चुक्ता करनी पड़ेंगी। जितना हम देही अभिमानी स्थिति में स्थित होंगे, ड्रामा पर निश्चय होगा, बाबा को याद करेंगे उतना हमें बन्धनमुक्त होने की महसूसता आयेगी। अगर लक्ष्य की स्मृति हो तो हमारी स्थिति निरन्तर आगे बढ़ सकती है। देह के संस्कार हैं – काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष आदि। आत्मा के सात मूल संस्कार हैं – ज्ञान, पवित्रता, शान्ति, प्रेम, सुख, आनन्द और शक्ति। ये मेरे असली स्वभाव-संस्कार हैं। देह के पदार्थ हैं – घर, गाड़ी, कुर्सी आदि ज़रूरत की चीज़ें और आत्मा के पदार्थ हैं – दैवी गुण जैसे कि सत्यता, निर्भयता, ईमानदारी, सरलता, मधुरता आदि। देह के पदार्थ कभी भी नष्ट हो सकते हैं लेकिन आत्मा के गुण अविनाशी हैं। जब तक आत्मा में शक्ति नहीं आयेगी तब तक आत्मा शिव बाबा को याद नहीं कर पायेगी। जब तक आत्मा शिव बाबा को याद नहीं करेगी तब तक वह सतोप्रधान नहीं बन पायेगी।

हर आत्मा की सोचने की गति अपनी अलग-अलग होती है। साधारणतया व्यक्ति की विचार-गति एक मिनट में 12 से 18 विचार तक होती है। जब व्यक्ति को डर लगता है या चिंता होती है तो उसकी विचार-गति प्रति मिनट 22 हो जायेगी। इस विचार-गति में भूतकाल में जो-जो हुआ है वो-वो हमारी स्मृति में आता है। कम विचार-गति में जैसे कि एक मिनट में 6-7-8 तक विचार हों तो अच्छी-अच्छी बातें अन्दर जमा होती हैं। जब हम इस विचार-गति में आ जाते हैं तो बड़ी-बड़ी बातें भी छोटी लगने लगती हैं और स्थिति प्रभावित नहीं होती है। विचार-गति सदा कम कैसे रहे? परमात्मा की विचार-गति शून्य (zero, जीरो) है। जितना हम परमात्मा को याद करेंगे उतना हम उनके करीब जायेंगे। किसी भी देहधारी को याद करने से विचार-गति बढ़ जाती है। मान लीजिए, आपने अपनी माँ को याद किया उनकी विचार-गति 20 है तो आपकी विचार-गति भी 20 हो जायेगी। सदा ध्यान रहे कि विचार-गति कम रखेंगे तो नकारात्मक बातें आयेंगी ही नहीं।

✦✦✦

माँसाहार या शवाहार

– ब्रह्माकुमारी उर्मिला, शान्तिवन

जिसे हम माँस कहते हैं वह वास्तव में क्या है? आत्मा के निकल जाने के बाद पाँच तत्वों का बना आवरण अर्थात् शरीर निर्जीव होकर रह जाता है। यह निर्जीव, मृत अथवा निष्प्राण शरीर ही लाश या शव कहलाता है। यह शव आदमी का भी हो सकता है और पशु का भी। इस शव को बहुत अशुद्ध माना जाता है। इसकी भूत, मिट्टी आदि निकृष्ट चीजों से तुलना की जाती है। यदि कोई इसे छू लेता है तो उसे स्नान करना पड़ता है। जिस घर में यह रखा रहता है उस घर को अशुद्ध माना जाता है और वहाँ खाना बनना तो दूर कोई पानी भी नहीं पीना चाहता। इसको देख कर कई लोग तो डर भी जाते हैं क्योंकि आत्मा के निकल जाने पर यह अस्त-व्यस्त और डरावना हो जाता है। माँसाहार करने वाले लोग इसी शव को या लाश को खाते हैं। इसलिए यह माँसाहार, शवाहार या लाशाहार ही है।

किसी भी पशु-प्राणी की हत्या किए बिना माँस मिल नहीं सकता। परन्तु हत्या के बाद शरीर अस्पृश्य हो जाता है। आत्मा के निकलते ही शरीर का खून पानी हो जाता है और वह अकड़ने लगता है। सड़न की प्रक्रिया प्रारम्भ हो जाती है जो सड़ांध पैदा करती है। जीवित शरीर में वर्षों तक भी बदबू नहीं आती परन्तु आत्मा के निकलते ही शरीर की दुर्गन्ध इतनी तीव्र होती है कि दूर-दूर तक भी वातावरण को बदबूदार बना देती है। मृत शरीर में तुरन्त रासायनिक परिवर्तन होने शुरू हो जाते हैं और यदि लाश को ठिकाने न लगाया जाए तो उसमें उत्पन्न कीटाणु बड़े-बड़े कीड़ों का रूप धारण कर लेते हैं जिससे संक्रामक रोग फैलते हैं जो महामारी में भी परिवर्तित हो सकते हैं। इसलिए लाश को अपवित्र और अछूत माना जाता है। विचार कीजिए, जिस शव को मात्र हाथ से छू लेने पर आदमी अपवित्र बन जाता है और उसे स्नान करना पड़ता है, उसी लाश को माँस खाने वाला व्यक्ति केवल हाथों से ही नहीं बल्कि मुँह से छूता है, नहीं, नहीं, मात्र छूता नहीं, उस लाश को दाँतों से चबाता भी है और फिर पेट में डालता भी है। ऐसा व्यक्ति जिसके पेट में लाश पड़ी हो, कितना भी स्नान कर ले, इत्र लगा ले, क्या कभी शुद्ध-पवित्र माना जा सकता है? कदापि नहीं।

वध करने पर मृत शरीर एकदम से बदबू चाहे नहीं देता परन्तु सड़न की प्रक्रिया उसी क्षण प्रारम्भ हो जाती है। यह एक कठोर सत्य है कि माँस शीघ्र सड़ने वाला पदार्थ है। उसमें तुरन्त बैक्टीरियल विघटन होना शुरू हो जाता है। माँस को पकाने पर इसमें मौजूद बैक्टीरिया और परजीवी या तो नष्ट होते ही नहीं और यदि हो भी जाएँ तो उनकी मुर्दा देह माँस में ही रहती है और सड़ती है जिससे खतरनाक टॉक्सिन और विषैले पदार्थ निर्मित होते हैं जो घातक रोग पैदा करते हैं और कभी-कभी विष का असर तीव्र होने के कारण लोग मर भी जाते हैं। अमेरिका में 25 ऐसी बीमारियाँ खोजी गई हैं जो माँसाहार से होती हैं। इस देश में 13.5 लाख लोगों की मृत्यु माँसाहार से होती है जो कि मृत्यु संख्या का 60% है। अमेरिका स्थित फिजीशियंस कमेटी फॉर रेस्पोंसेबिल मेडिसिन ने मुर्गे के माँस, अंडे आदि को रोग बढ़ाने वाला माना है। संस्था ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि ऐसे भारतीय जो तंदुरुस्त रहने के लिए माँस, अंडे आदि का लुत्फ उठाते हैं, वे एक तरह से अपने मौत के वारंट पर खुद हस्ताक्षर कर रहे हैं। संस्था का दावा है कि भारत में जो लोग हृदय रोग की चपेट में हैं, उनमें से अधिकांश इनका इस्तेमाल करते रहे हैं। भारत में हृदय रोगियों की संख्या तुलनात्मक रूप से अधिक है और इसके लिए अक्सर खान-पान को दोषी माना जाता रहा है।

प्रकृति ने कुछ ऐसे जानवर बनाए

हैं जो मृत शरीरों को खाकर सफाई करते हैं, इनमें चील, बाज, कौए आदि हैं। इन्हें कहीं भी शव दिख जाए, झुण्डों में एकत्रित हो जाते हैं। मानव को प्रकृति ने ऐसा कोई कार्य नहीं सौंपा परन्तु कितने अफसोस की बात है कि सर्व जीवों में सर्वश्रेष्ठ समझे जाने वाले मानव ने अपने लिए जान-बूझ कर निकृष्ट कार्य को अपना लिया है। वह स्वेच्छा से वह कार्य करता है जो चील, कौए आदि मेहतर प्रणियों द्वारा किया जाता है।

कहा जाता है कि प्राचीन समय में, जब सभ्यता का विस्तार नहीं हुआ था उस समय मानव जंगलों में रहता था। उसके पास जीवनोपयोगी साधनों का अभाव था। उस समय पेट भरने के लिए वह जंगली जानवरों का कच्चा माँस खा लेता था। धीरे-धीरे कृषि प्रारम्भ हुई। अनेक प्रकार के खाद्य का उत्पादन हुआ, शहर बसे और मानव ने अनेक जीवनोपयोगी साधनों का आविष्कार कर उस आदिम जंगली जीवन को तिलांजली दे दी। उस समय की भेंट में आज उसके पास मकान, वस्त्र, जूते, बर्तन, मोटर, कम्प्यूटर आदि सब उत्तम प्रकार के आरामदायक साधन हैं। उपरोक्त तथ्य यदि सत्य है तो मानव ने काफी विकास कर लिया है। वह हाथ में लेकर खाने के बजाए, पत्तों पर रख कर खाने के बजाए आधुनिक डिजाइन की प्लेट्स में चम्मच के प्रयोग से खाता है। डायनिंग टेबल पर बैठना भी उसने सीख लिया परन्तु प्रश्न यह है कि वह खाता क्या है? उसकी प्लेट में है क्या? यदि इतनी साज-सज्जा, रख-रखाव को अपना कर, इतना विकास करके भी उसकी प्लेट में रखा आहार यदि आदिम काल वाला ही है, यदि इतना विकास करके भी वह उस जंगली मानव वाले खाद्य को ही अपनाए हुए है तो विकास क्या किया? यह तो वही बात हुई कि मटका मिट्टी के स्थान पर सोने का हो गया पर अन्दर पड़ा पदार्थ जहर का जहर ही रहा। यदि सभ्यता ने विकास किया तो क्या सिर्फ बर्तनों और डायनिंग टेबल-कुर्सियों तक ही विकास किया? क्या खाद्य के नाम पर सभ्यता नहीं आई? फर्क इतना ही तो है कि उस समय जानवर को मारने के तरीके दूसरे थे और आजकल तीव्रगति वाली मशीनें ये कार्य कर देती हैं परन्तु मुख तो अपने को मानव कहलाने वाले का ही है। मारने के हथियार बदल गए परन्तु खाने वाला मुख नहीं बदला। मुख तो मानव का ही है।

शव को जब श्मशान में ले जाते हैं तो उसे चिता में लिटा कर आग लगाई जाती है परन्तु मानव को देखिए, वह शव को अथवा शव के टुकड़ों को रसोईघर में ले आता है। फिर उनको रसोईघर के बर्तनों में पकाता है तो उसकी रसोई क्या हो गई? कब्रिस्तान ही बन गई ना! और फिर उस लाश को मुँह के माध्यम से पेट में डालता है। सच पूछो तो ऐसे व्यक्ति के घर की हवा भी पतित बनाने वाली है। संत तुकाराम कहते हैं कि पापी मनुष्य यह नहीं देख पाता है कि सभी प्राणियों में प्राण एक सरीखा होता है। जो व्यक्ति न तो स्वयं कष्ट पाना चाहता है, न मरना चाहता है वह निष्ठुरतापूर्वक दूसरों पर हाथ कैसे उठाता है? यही भाव संत दादू दयाल का है –

कोई काहू जीव की,
करै आत्मा घात।
सांच कहू संसा नहीं,
सो प्राणी दोजखि जात।।

पूरी गम्भीरता के साथ संत दादू दयाल जी कहते हैं कि 'मैं सच कहता हूँ, मुझे इसमें तनिक भी शंका नहीं है कि ऐसा प्राणी नर्क में जाता है अर्थात् पाप में डूब जाता है।' वास्तव में माँस खाने वाले को इस शब्द का अर्थ समझना चाहिए। माँस अर्थात् 'माम् स:' – मेरा वह। जिसको मैं खा रहा हूँ वह मुझे खाएगा। यह एक दुष्चक्र है। हिंसा इस दुष्चक्र को जन्म देती है – 'उसके इस जन्म में मैं उसे खाता हूँ, अगले जन्म में मुझे हिंसा का शिकार होना होगा और इस प्रकार मेरा भोजन ही मेरा काल बन कर जन्म-जन्मांतर तक मेरे पीछे लगा रहेगा।' इसलिए **माँ प्रकृति की बड़ी सन्तान मानव को अपने छोटे भाइयों (मूक प्रणियों) को जीने का अधिकार देते हुए 'मैं जीऊँ और अन्य को मरने दो' इस राक्षसी प्रवृत्ति को छोड़ देना चाहिए।**



1



2



3



4



5



6



7



8

1. देहली (पीतमपुरा)- आध्यात्मिक झाँकी के उद्घाटन के पश्चात् पूर्व केन्द्रीय श्रम मन्त्री भ्राता साहेब सिंह वर्मा, निगम पार्षद बहन निर्दोष सरीन, ब्र.कु. प्रभा बहन तथा अन्य समूह चित्र में। **2. देहली (डेरावाल नगर)**- वैज्ञानिक तथा अभियन्तागण के लिए आयोजित सेमीनार के बाद ब्र.कु. चक्रधारी बहन तथा ब्र.कु. सुरेश भाई उनके साथ समूह चित्र में। **3. फरीदाबाद**- 'सुरक्षित तथा सुखद जीवन यात्रा' अभियान के उपलक्ष्य में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए दैनिक जागरण के मुख्य रिपोर्टर भ्राता गौतम जैन, 'शेरे हरियाणा' के सम्पादक भ्राता अमरनाथ बागी, ब्र.कु. ऊषा बहन तथा अन्य। **4. इटावा (नेविल रोड)**- आध्यात्मिक चित्र प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए सांसद भ्राता रघुराज सिंह शाक्य जी। साथ में हैं ब्र.कु. ज्योत्सना बहन, शिव सेना की जिला मीडिया प्रभारी बहन पूनम जी तथा अन्य। **5. अम्बाला छावनी**- आध्यात्मिक कार्यक्रम में राजयोगिनी मनोहर इन्द्रा दादी जी के साथ मंच पर विराजमान हैं टेलिकॉम के महाप्रबन्धक भ्राता जयभगवान गुप्ता जी, बैंक प्रबन्धक किरण गुप्ता जी, ब्र.कु. कृष्णा बहन तथा वरिष्ठ उद्योगपति भ्राता एन.सी. जैन जी। **6. नई देहली (हरिनगर)**- युवा सशक्तिकरण समारोह का उद्घाटन करती हुई दिल्ली विश्वविद्यालय की सचिव बहन अमृता धवन, ब्र.कुं. अनुसूईया बहन, ब्र.कु. सुन्दरलाल भाई, ब्र.कु. कमलेश बहन, ब्र.कु. सुशान्त भाई तथा अन्य। **7. चरखी दादरी** - आध्यात्मिक संग्रहालय के उद्घाटन समारोह में सम्बोधित करती हुई राजयोगिनी मनोहर इन्द्रा दादी जी। साथ में हैं ब्र.कु. अचल बहन तथा विधायक भ्राता जगजीत सांगवान जी। **8. देहली (मोहम्मदपुर)**- सांसद भ्राता वी.के. मल्होत्रा को ईश्वरीय साहित्य देती हुई ब्र.कु. लक्ष्मी बहन। साथ में हैं ब्र.कु. मीरा बहन।



1



2



3



4



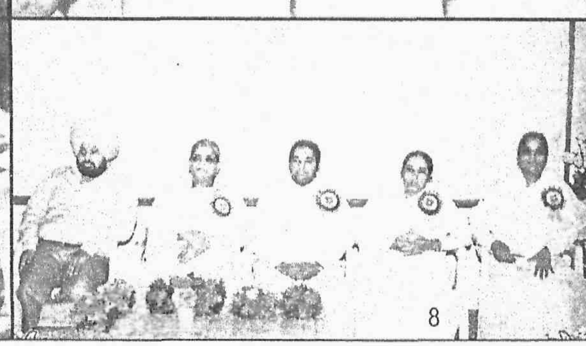
5



6



7



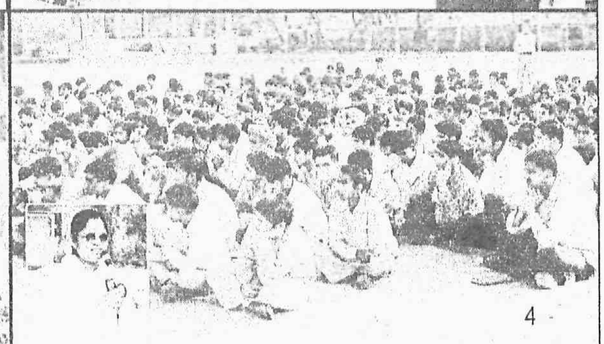
8

1. देहली (स्वास्थ्य विहार)- ‘मेडिटेशन एण्ड मेडिसिन’ कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. कमलमणि दादी जी, उद्योगपति भ्राता एम.एम. अग्रवाल, भारत विकास परिषद् की गगन विहार शाखा के अध्यक्ष भ्राता विपिन मेहता जी, ब्र.कु. आशा बहन तथा अन्य। **2. ऐलनाबाद-** विधायक भ्राता चौधरी भागीराम को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. रेखा बहन। **3. हिसार-** जीवन मूल्य आध्यात्मिक कला मन्दिर का उद्घाटन करते हुए ब्र.कु. अचल बहन, सिविल सर्जन डॉ. भ्राता ओ.पी. फौगाट, रोडवेज महाप्रबन्धक भ्राता डी.पी. यादव, ब्र.कु. रमेश बहन तथा अन्य। **4. हाथरस-** सर्वधर्म सम्मेलन के सफल संयोजन के फलस्वरूप, ब्र.कु. भावना बहन को, अपर जिलाधिकारी भ्राता प्रभात शर्मा तथा अपर पुलिस अधीक्षक भ्राता जितेन्द्र कुमार शाही प्रशस्ति-पत्र तथा प्रतीक-चिन्ह देकर सम्मानित करते हुए। **5. अम्बाला शहर-** आध्यात्मिक झाँकी के निमित्त ब्र.कु. सरोज बहन को सम्मानित करते हुए सनातन धर्म सभा के भ्राता अग्रवाल जी। **6. जीन्द-** आध्यात्मिक झाँकी का उद्घाटन करते हुए प्रसिद्ध समाजसेवी डॉ. भ्राता हरिचन्द मिड्ढा जी। साथ में हैं ब्र.कु. विजय बहन तथा ब्र.कु. कमलेश बहन। **7. सुनाम-** मधुमेह नियन्त्रण शिविर का उद्घाटन करते हुए सिविल सर्जन बहन इन्द्रजीत कौर वालिया, ब्र.कु. डॉ. गिरीश पटेल भाई तथा अन्य। **8. मानसा-** ‘एकता और सद्भावना के पहियों पर स्वच्छ, स्वस्थ तथा स्वर्णिम भारत’ अभियान से सम्बन्धित कार्यक्रम में मंच पर विराजमान हैं ए.डी.सी. भ्राता सुखविन्दर सिंह, ब्र.कु. सुदेश बहन, ब्र.कु. राजेन्द्र बहन, ब्र.कु. कृष्णा बहन तथा ब्र.कु. बिन्दु बहन।

















1. देहली (हस्तसाल)- आध्यात्मिक झाँकी का उद्घाटन करते हुए निगम पार्षद भ्राता सतपाल सेठी, पूर्व विधायक भ्राता नरेश त्यागी, ब्र.कु. भावना बहन तथा अन्य। **2. सिरसा**- ब्र.कु. अरुण भाई, ब्र.कु. रजिन्द्र बहन तथा 'स्वच्छ, स्वस्थ स्वर्णिम भारत' अभियान के अन्य सदस्यों को सम्मानित करते हुए शहीद उद्यमसिंह कमेटी के प्रधान डॉ. भ्राता भजन लाल तथा उनके साथी। **3. कुण्ड (रेवाड़ी)**- चैतन्य देवियों की आध्यात्मिक झाँकी के उद्घाटन के पश्चात् स्टेशन मास्टर भ्राता जगदीश चन्द्र शर्मा को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. दर्शना बहन, ब्र.कु. बृजेश बहन। साथ में हैं भाजपा अध्यक्ष ताराचन्द भाई। **4. बुढ़लाढ़ा (मानसा)**- विद्यार्थियों को ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. बिन्दु बहन। **5. पटौदी**- सरस्वती विद्या मन्दिर में नैतिक शिक्षा पर प्रवचन करती हुई ब्र.कु. सन्तोष बहन। **6. कैथल**- राजयोगिनी दादी मनोहर इन्द्रा जी सभा को सम्बोधित करती हुईं। **7. देहली (राजीव नगर)**- विशाल जनसभा को ईश्वरीय सन्देश देती हुई ब्र.कु. सरला बहन तथा ब्र.कु. कुन्ती बहन। **8. देहली (नरेला)**- आकाशवाणी क्लब में योग-कक्ष का उद्घाटन करते हुए डॉ. भ्राता एम.एल. गुप्ता जी, ब्र.कु. दुर्गा बहन, केन्द्र अभियन्ता भ्राता आर.के. सैनी तथा अन्य।

देखता रहा। फिर बोला – "तुम विचित्र लोग हो। लकड़ी नहीं, पानी नहीं, खाने का सामान नहीं, तब क्या भूखे रहोगे" बड़े लड़के ने कहा – "तुम जो हो।" देवदूत ने कहा – "मैं उनके लिए हूँ जो एक होकर रहते हैं। तुम तो आपस में ही फूटे बैठे हो। तुमको कुछ देने का कोई लाभ न होगा।" यह कह वह अदृश्य हो गया।

यह है एकता और फूट का परिणाम। जो लोग मिल कर रहते हैं उन्हें निश्चित रूप से सम्पत्ति मिलती है, सुख मिलता है। जो मिल कर नहीं रहते उन्हें असफलता के सिवाय कुछ नहीं मिलता। गिरधर जी ने ठीक ही कहा है –

कह गिरधर कविराय,
फूट जेहि के घर आई।
हिरण्यकश्यप,
कंस गए, बलि रावण भाई।।

शिव बाबा भी कहते हैं – एकता और एकाग्रता का पाठ पक्का करो। **व्यवहारिक जीवन में जितना एकता का संस्कार होगा मानसिक एकाग्रता उतनी ही बढ़ती जाएगी। भगवान की योजना है एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा, एक कुल वाली दुनिया की स्थापना करना। उसमें जाने के लिए सर्व हदों को छोड़, बेहद का दिल बना कर दिलाराम बाप के दिल पर विराजमान रहो तभी भविष्य में भी शान से सिंहासन पर बैठ सकेंगे।** माला का मनका बनने का आधार है – एकता के सूत्र में पिरोना। ध्यान रखना, सूत्र में कभी गाँठ न पड़ जाए, नहीं तो माला अच्छी नहीं लगेगी। मनके के साथ मनका जुड़ा हो तभी बाप के गले का हार बन सकेंगे। इसके लिए, **एक परमात्मा के हैं, एक हैं, एक के हीं रहेंगे – यह अभ्यास बढ़ाते जाएँ।**

★★

मायाजाल-स्वार्थ-मद तज दे

– डॉ. सन्तशरण शर्मा 'सन्त', मथुरा (उ.प्र.)

मायाजाल-स्वार्थ-मद तज दे, भ्रम भरी यह मीठी धड़कन।।
लुटता रहता तू नर प्रतिपल, खोकर अपना जीवन-सम्बल,
गरल पी रहा तू अविरल,
विषय-वासना-कारागृह को, समझे बैठा है तू मधुबन।

अहंकार की असि को धारे, पाप करे तू सांझ-सकारे,
मोह-पाश को हटा-हटा रे,
तुच्छ बुद्धि के महाकाश में, भरना छोड़ आज तू थिरकन।

तेरी प्रज्ञा खगी उड़ानी, पी यौवन-मदिरा मनमानी,
तू है अधम देह-अभिमानी,
देख रूप-गन्धर्व नगर को, भूल चुका है तू नन्द-नन्दन।

रागी नहीं और ना त्यागी, नहीं भावना तुझ में जागी,
छोड़ी, सदुद्देश्य की आगी,
ज्ञान-योग सद्बुद्धि तज कर, कैसे बने युवक! तू कुन्दन।

निज स्थिति का ध्यान करे तू,
प्यारे प्रभु का गान करे तू, ज्ञानामृत का पान करे तू,
स्वयं प्रकाशित बन हो जाए–महिमा मण्डित चन्दन।

वाह रे मेरा भाग्य!

– खुमेश चन्द्र रघुवंशी

भारत में अनेक दर्शनीय मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे, गुफाएँ, ज्योतिर्लिंगम् मठ, धार्मिक संस्थान, आश्रम, घाटियाँ, प्रेरणादायी कलाकृतियों से युक्त स्थल, सन्तों के आश्रम आदि हैं। ये सभी स्थान भारत की संस्कृति तथा इतिहास, दोनों का परिचय देते हैं। परन्तु इन सबसे अलग एक शक्तिस्थल, शान्ति का आलय है प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय का मुख्यालय जो राजस्थान में आबू पर्वत की तलहटी में बसा है। आबू रोड से लगभग 7 कि.मी. की दूरी पर 'शान्तिवन' परिसर को, बंजर भूमि तथा रेतीली भूमि परिवर्तित कर, नैसर्गिक कल्पनाओं के आधार से सजाया गया है और मन को लुभाने वाला बनाया गया है। यह शान्तिवन सर्व प्राप्तियों की खान है, पवित्र भूमि है, चरित्र भूमि है, वरदानों की भूमि है। यहाँ निरन्तर गतिमान ज्ञान-यज्ञ में बुराइयों को स्वाहा किया जाता है। यहाँ की स्मृति समर्थी दिलाती है और सारा व्यर्थ समाप्त कर देती है। शुभ्रता से सजी-सजाई यह भूमि प्रजापिता ब्रह्मा बाबा की तथा उनकी मुख सन्तानों की कर्मभूमि है।

यह निराला स्थान है, यहाँ हर कार्य में कुशलता दिखाई देती है। सद्भाव, प्रेम तथा आस्था के साथ मधुर मुस्कान लिए स्वागत करता हुआ यह स्थल, अस्वस्थ को स्वस्थ बना कर खुशी की खुराक से भरपूर कर, सम्पूर्ण जीवन परिवर्तित कर देता है। हमने तो आबू स्थित इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के बारे में कभी सोचा भी नहीं था, पहुँचना तो दूर की बात थी। इतनी अच्छी जगह में हमारा अचानक आना हुआ एक शिविरार्थी के रूप में। लगा कि कोई अदृश्य शक्ति हमारी मदद कर रही है, सदा हमारे साथ है। स्थानीय सेवा-केन्द्र की बहन ने हमें आबू जाने का स्वीकृति-पत्र दिया और मेरे मन में आया – "चलो बुलावा आया है।"

शान्तिवन के कोने-कोने से आभास हुआ मानो कि वह हमारा पूर्ण परिवर्तन करने को उत्सुक है। विद्यालय की ज्ञान-ज्ञानेश्वरी बहनों के मधुर बोलों से जीवन की स्वर्णिम सुबह उदय हो गई, उनके महावाक्यों ने शील और सौन्दर्य से सजाया। ऐसे दिव्य सौन्दर्य को देख मन में आया कि अवश्य ही सूर्य भी यहाँ का दिव्य रसपान करके ही आगे की यात्रा जारी रखता होगा और रात्रि विश्राम से पहले भी यहाँ के आनन्द को अपने अंक में अवश्य भर लेता होगा। यहाँ मेरे जीवन ने करवट ली। आध्यात्मिक शिक्षा के आधार से परिवर्तन हुआ। ज्ञान के माध्यम से परमपिता परमात्मा के समीप पहुँचने का साहस मिला, हमारा सारा जीवन ही बदल गया। हम कौन हैं, कहाँ से आये हैं और कहाँ जाना है, इन प्रश्नों का उत्तर मिला। दुनिया में सब आते हैं, जाते हैं, चक्र चलता रहता है, हमने अपने सच्चे दाता, बाप, सद्गुरु, शिक्षक, जीवनदाता केवल एक परमात्म शिव से मिलने का सौभाग्य पाया। प्रलोभन से निकल, मन की दुर्बलता और वास्तविकता को परखने का ज्ञान मिला। मन की चंचलता रोकने के लिए राजयोग की शिक्षा का अनूठा उपहार मिला। समझ आई और नासमझी हटी। जीवन की गुह्यता के साथ अपने दाता को जाना। परमपिता के द्वारा सच्चा प्रेम इस विद्यालय में ही प्राप्त हुआ। भाई-बहनों, वरिष्ठ दादियों, दीदियों का भी पावन प्यार जीवन में पहली बार मिला। दादियों के दिल में सतयुग का राज्य-भाग्य सौंपने की उदारता है। भाई-बहनें एक हों या हजार, सबसे मिल कर सौगात के साथ रूहानी दृष्टि से निहाल करने की शुभ भावना है। यहाँ के प्यार के लिए कोई मिसाल ही नहीं। वर्णन के लिए शब्दकोश में कोई समर्थ शब्द ही नहीं। हमने जो पाया, कोई पा नहीं सकता। मनुष्य को मनुष्य बनाने का

और फिर मनुष्य को देवता बनाने का वास्तविक शक्तिस्थल है यह। हम पद और शक्ति के नशे में थे। हमने मान लिया कि हमारा परिवर्तन यहाँ ही सम्भव है। शिव बाबा ने हमें अपनाया है। हमने भी सच्चे दिल से साहब को अपनाया है। ईश्वरीय स्नेह के सूत्र में हम बाँधे गए। अब हम सदा इसी विचार से जुड़े रहते हैं कि बाबा हमसे क्या चाहता है? इसका उत्तर है कि भगवान हाथ में हाथ ले, हमें अपना बनाना चाहता है। बाबा कहते – "बच्चो, अब तुम्हारा भाग्य मेरे हाथ में है।" हमने जो खुशी पाई वह अदृश्य होते भी प्रत्यक्ष चेहरे पर है। भक्ति में हम पुकारते थे – 'भगवान आओ, आओ दर्शन दो।' परन्तु यहाँ तो भगवान ने हमें लाखों, करोड़ों में से अपना लिया है। वह जो देता है उसको कोई छीन नहीं सकता। वाह रे हमारी तकदीर! वाह रे हमारा भाग्य! गर्व है हमें, हम खुशनसीब हैं, हमने ईश्वरीय गोद पाई है। स्वयं भगवान की हम पर प्यार भरी नजर है। हमारा छत्र ही है सर्वशक्तिवान इसलिए हम निर्भय, निश्चिंत हैं। अब हम केवल वही करेंगे जिसके लिए भगवान ने हमें अपना बनाया है। इस यात्रा से हमने पाया कि बुद्धि को सशक्त, स्वच्छ बनाने का यही राजमार्ग है। ✪ ✪

तन में है तू आत्मा अक्षर

– **ब्रह्माकुमार गौतम सुत्रावे, बणी (यवतमाळ)**

मैं और मेरा कहता हरदम, आखिर क्या तू पायेगा?
मिट्टी का है तन ये तेरा, मिट्टी में मिल जायेगा।।
सुबह का सूरज, शाम को ढलता,
आज खिला फूल, कल कुम्हलाता।
कुदरत का यह राज अनोखा, कब समझ में आयेगा?
मिट्टी का है तन ये तेरा .....
पाँच भूतों से बना है यह तन, मत कर इसके लिए जतन।
टूटेगा यह आखिर एक दिन, भले ही तू ना चाहेगा।।
मिट्टी का है तन ये तेरा .....
तुम नहीं, यह काया नश्वर, तन में है तू आत्मा अक्षर।
जान भी ले यह सत्य सनातन, कब तक धोखा खायेगा?
मिट्टी का है तन ये तेरा .....
बन जा अब तू शिव का नन्दन, सेवा में लग, हो काया चन्दन।
मैं, मेरा और कुटुम्ब, कबीला, बोझ ये कब तक ढोयेगा?
मिट्टी का है तन ये तेरा ..... ❑❑

योगानुभूति.................पृष्ठ 01 का शेष

इस प्रकार के विचित्र अनुभव के बारे में क्या कहें? संसार में कहीं भी सभी रस एक जगह नहीं होते, परन्तु यह रस तो ऐसा है कि इसी में ही शान्ति, आनन्द, प्रेम, शक्ति, मधुरता, प्रकाश, दिव्यता, तुष्टि, तृप्ति-भाव सभी एक साथ ही अनुभव होते हैं। ऐसा अनुभव होता है कि एक नये प्रभाव-क्षेत्र में आ गए हैं। परमात्मा का चुम्बकीय आकर्षण हमें स्पष्ट महसूस होता है।

योग की इस स्थिति से उतरकर जब हम कर्मेन्द्रियों का प्रयोग कर कर्म-क्षेत्र में उतरते हैं, तब भी ऐसा अनुभव होता है कि हम अव्यक्त हैं; फरिश्ते-से हैं। उस पराकाष्ठा वाली स्थिति का प्रभाव काफी समय तक रहता है। बाद में भी हम हल्कापन महसूस करते हैं। जब हम चलते हैं तो ऐसा लगता है कि हमारे पाँव पृथ्वी पर होते हुए भी उससे ऊपर हैं; हम आकाश तत्व से नहीं बल्कि प्रकाश तत्व से घिरे हुए हैं। हम बन्धन में नहीं बल्कि स्वतंत्र हैं। हममें एक अपूर्व उत्साह, उमंग, आत्म-विश्वास, चरित्र बल, आध्यात्मिक शक्ति, नैतिक दृढ़ता, कार्य-क्षमता, श्रेष्ठ भावना, सेवा-भाव और नम्रता आदि-आदि हैं कि जिन्हें हम पहले चाहने पर भी अपने जीवन में नहीं ला सकते थे। ✦✦

नशा – नाश की जड़

– ब्रह्माकुमार महेन्द्र मानेचा, पाली (राज.)

नशा एक बुरी आदत है। लोग खुद इसे जानते हैं मगर फिर भी मनोबलहीनता के कारण नशा करते हैं और दोष दूसरों का निकालते हैं। कोई कहता है कि मानसिक दबाव है, कोई कहता है कि शारीरिक थकान है, कोई तो अपने आपको व्यस्त व फैशनेबल दिखाने के लिए भी नशा करते हैं।

इन नशों का परिणाम इतना भयानक है कि इन्सान तो क्या हैवान भी थरथरा जाये। आजकल नशा हर देश और समाज में फैल गया है। हमारे देश में इसका जहर चारों ओर फैल गया है। वृद्धों की बात छोड़ भी दें लेकिन आज तो युवा पीढ़ी में भी इसने अपनी जड़ें गहरी कर ली हैं। युवा के पास जहाँ कर्मठता होनी चाहिए थी वहाँ आज हर वक्त मुँह में सिगरेट, गुटखा और पान मसाला है। अफीम, भाँग, चरस और स्मैक भी आज युवा पीढ़ी के नशे में शुमार हैं। शराफत के बजाए शराब तो व्यक्तियों की शान बन गई है। शादियों, पार्टियों में बोतलों का खुलना आम बात है। शराबी को तो बस बहाना चाहिए पीने का, दु:ख की बात घटित हो तो गम का नाम लेकर पीता है, सुख में खुशी का नाम लेकर। हाल ही में 'राजस्थान पत्रिका' में प्रकाशित मेनका गाँधी के एक लेख में शराब के घातक रसायनों का विस्तृत ब्यौरा दिया गया था। हम यहाँ लेख के कुछ अंश उद्धृत कर रहे हैं – ''अनेक व्यक्ति बीयर या वाइन को अपेक्षाकृत 'स्वास्थ्यवर्द्धक' पेय मानते हैं, अनेक शाकाहारी लोग भी यह मानते हैं कि शराब तो शाकाहारी पेय है। चाहे वाइन हो या बीयर, सिर्फ अंगूर के रस या अनाज के खमीर जैसे उफान से ही तैयार नहीं होती। जब आप बाजार में बिकने वाली कोई मदिरा पीते हैं तो अनेक घातक रसायनों और पशुओं के अंगों का खतरनाक मिश्रण ग्रहण करते हैं।

बीयर हो या मदिरा, उसके संरक्षण के लिए सल्फर-डाई-ऑक्साइड का इस्तेमाल होता है। सल्फर-डाई-ऑक्साइड उन यौगिकों में से है जो बिजलीघर से निकले धुएँ में होता है और जिससे तेजाबी वर्षा होती है। इसी कारण संवेदनशील व्यक्ति शराब पीने के बाद जी मचलाने, सूजन महसूस करने या अस्थमा के दौरे की शिकायत करते हैं। एक गिलास लाल वाइन में 40 मिलीग्राम तक सल्फर-डाई-ऑक्साइड होती है। सफेद वाइन में से अशुद्धियाँ दूर करने के लिए खमीरी की प्रक्रिया के दौरान उसे प्रति हैक्टोलीटर 100 ग्राम चारकोल से निकाला जाता है। इन वस्तुओं में हड्डियों से बनी पेय जेलाटिन, मछलियों के अंगों से बना आइसिंग्लस, दूध के प्रोटीन से निकाला गया कैसीन और पोटेशियम केसिनेट, अंडे या रक्त के सूखे पाउडर से बना एल्बूमिन, बेंटोनाइट और केओलिन नामक मिट्टियाँ और अवलेह के रूप में सिलकॉन-डाई-ऑक्साइड के अलावा लकड़ी से प्राप्त टेन्निन शामिल हैं। शराब के संरक्षण, स्थिरीकरण और परिशोधन के अलावा मनचाहा रंग और स्वाद लाने के लिए जिन रसायनों का उपयोग किया जाता है वे मानव शरीर में जाकर घातक असर डालते हैं।''

नशे की बढ़ोतरी का एक कारण यह भी है कि विज्ञापनों में नशे की चीजों का प्रचार लुभावने तरीके से किया जाता है। किसी बड़े फिल्म स्टार को शराब की बोतल के साथ दिखाया जाता है तो अन्य किसी को सिगरेट के साथ। कोई गुटखा खा कर कहता है ''ऊँचे लोग ऊँची पसन्द'' और लोग इन स्टारों के दिवाने होकर उनका अनुसरण कर नशा करते हैं। जितनी भी बड़ी कम्पनियाँ हैं सिगरेट की, उनके मालिक सिगरेट नहीं पीते हैं। हर नशे की चीज पर लिखा होता है – ''स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।'' सच तो यह है कि –

गुटखा, जर्दा, शराब, तम्बाकू।
ये सब हैं तन-मन के डाकू।।

फिर भी खुलेआम नशे की चीजों की तस्करी हो रही है। दिन में भीख

माँगने वाले भिखारियों को भी शाम को चरस, गाँजा जैसी महँगी चीजें आसानी से पीते देखा जा सकता है। एक तथ्य के अनुसार, जितने अरब रुपये, सरकार को इन नशीली चीज़ों से राजस्व प्राप्त होता है उससे दुगना इनसे होने वाली बीमारियों पर खर्च हो जाता है। सिगरेट के एक कश में 43 ज़हरीले रसायन होते हैं जिनमें से 19 से कैंसर का खतरा होता है। विश्व में हर वर्ष डेढ़ लाख लोग तम्बाकू से होने वाले कैंसर से मरते हैं। इन तथ्यों के बावजूद सरकार इन चीजों पर रोक नहीं लगा रही है। सबसे पहले एक अमेरिकी ने एक गुटखा कम्पनी पर अपने कैंसर के कारण मुकदमा किया और कम्पनी को साढ़े दस लाख डॉलर देना पड़ा। कुछ दिन पूर्व 'दैनिक नवज्योति' में कनाडा की कैंसर सोसायटी के एक सद्प्रयास का निम्नलिखित समाचार छपा था –

''कनाडा की कैंसर सोसायटी ने सिगरेट के पैकों पर वैधानिक चेतावनी की जगह फेफड़ों के कैंसर, दिल की बीमारी और सड़े-गले दाँतों के चित्र प्रकाशित करने का फैसला किया है। हर पैक के ऊपरी हिस्से पर वेंटीलेटर में रखे, समय से पूर्व जन्मे बच्चे का चित्र, सड़े दाँतों वाला मुँह, ऑपरेशन थिएटर में लेटा एक व्यक्ति, सिगरेट पीती गर्भवती महिला और बीमार अंगों के चित्र दिखाए गए हैं। अध्ययन करने पर पता चला कि करीब 44 फीसदी लोगों ने इस पैक से प्रेरित होकर सिगरेट पीना ही छोड़ दिया जबकि करीब 43 फीसदी लोगों ने कहा कि इस पैक ने उन्हें स्वास्थ्य के प्रति जागरुक बना दिया है। धूम्रपान करने वाले हर पाँचवें व्यक्ति ने बताया कि इस पैक के कारण वे कम-से-कम एक बार तो सिगरेट जलाने से बच जाते हैं।'' भारत को भी इस बात से प्रेरणा लेनी चाहिए और नशों से सम्बन्धित चीजों के पैक पर इस प्रकार के चिह्न बनाने चाहिएँ क्योंकि यह एक मनोवैज्ञानिक तथ्य है कि शब्दों के बजाए चित्र, व्यक्ति के विवेक को अधिक प्रभावित करते हैं। ✵✵

नारी ही नर की उद्धारक

– ब्रह्माकुमारी ऊषा, मीरा सोसायटी, पुणे

धारण करके दिव्य गुणों को, सिखलाती जो सदाचरण।
भगवान भी उनका वन्दन करते, कहकर 'वन्देमातरम'।।
गूँज उठी नभ-मण्डल में, शिव की यह अमृतवाणी।
नारी ही नर की उद्धारक और विश्व-कल्याणी।।

तू समाज की धूरी है,अपनी शक्ति को पहचान ज़रा।
तेरी करुणा-दया के बल पर टिकी हुई यह वसुन्धरा।।
सृष्टि को स्वर्ग बना दे अब, देकर अपनी कुर्बानी।

नारी ही.....

अबला नहीं, सबल-सक्षम तू शिव बाबा की है शक्ति।
विषय-विकारों, दुर्गुणों से जो पल भर में दे मुक्ति।।
हे मातृ-शक्ति! अब जाग उठो, तुम बनो असुर संहारी।

नारी ही.....

इतिहास के पन्नों में स्वर्णांकित तेरी गौरव गरिमा।
प्रथम गुरु, जग-जननी, दुःख हरनी तेरी ही महिमा।।
अतुलनीय है शक्ति तेरी जो करती सिंह सवारी।

नारी ही.....

तू सीता, सावित्री, गार्गी, मैत्रेयी, मीरा, अनुसूईया।
लक्ष्मी, सरस्वती, सन्तोषी, पार्वती, तू जग-मैय्या।।
तुझको ही है भूतल पर, आध्यात्मिक लहर फैलानी।

नारी ही.....

हे शक्ति-स्वरूपा! ज्ञान स्वरूपा! शंख-ध्वनि अब गुँजा दो।
शिव की प्रत्यक्षता का झण्डा, विश्व-गगन में लहरा दो।।
परमात्म-मिलन के प्यासों को है सच्ची राह दिखानी।

नारी ही..... ❖✲

सशक्त बनाती है देहातीत अनुभूति

– ब्रह्माकुमारी डॉ. हंसा रावल, अमेरिका

मैं कैंसर-पीड़ितों की विशेषज्ञ हूँ। इस क्षेत्र का मुझे बहुत अनुभव है। कैंसर पीड़ित अपना शरीर बड़ी तकलीफ से छोड़ते हैं, बहुत दर्द होता है। सब कहते हैं कि उनके प्रति योग लगाओ, प्रार्थना करो। परन्तु मेरा अनुभव कहता है कि योग अथवा प्रार्थना करें या न करें, परमात्मा उनके साथ हमेशा रहता है। वह उन्हें हमेशा मदद करता है। जीवन में दु:ख बहुत आते हैं, कठिनाइयाँ बहुत आती हैं परन्तु भगवान हमेशा मदद करता है। भगवान की महिमा ही है – कृपालु, कल्याणकारी, रक्षक, दयालु। हम भगवान से कह देते हैं कि हमारे इस सम्बन्धी को ठीक करो परन्तु भगवान तो आत्मा का पिता है ना। इसलिए जब आत्मा को दु:ख होता है, तकलीफ होती है तो भगवान हमेशा साथ रहता है। सभी 650 करोड़ आत्माओं का साथ देता है भगवान। शिव बाबा कहते हैं ना कि कोई कठिनाई आए तो दिल से कहो – मेरा बाबा। यह बात सुनी भी है और अनुभव भी की है।

जब एक दुर्घटना में मैं देहातीत हुई

जब मैं पाँच साल की थी तब हम अफ्रीका में थे। हमारे घर के पीछे एक नदी थी। उस नदी में बहुत मगरमच्छ थे। हमें वहाँ जाने की सख्त मना थी, फिर भी एक दिन हम वहाँ गए। उस नदी में बहुत सुन्दर पत्ते थे। मेरा भाई उनसे खेलने लगा। किसी बच्चे ने उसे पानी में फेंक दिया। वह डूबने लगा। मैं भाई को बचाने के लिए नदी में कूदी। नदी 30 फीट गहरी थी। पानी भी तेज बह रहा था। मैं डूबने लगी। वहाँ खड़े छोटे-छोटे बच्चे तो मुझे बचा नहीं सकते थे। मैंने शरीर छोड़ दिया। मैं समझ गई कि ये बच्चे मुझे बचा नहीं पायेंगे। थोड़ी ही दूरी पर एक मसाई (अफ्रीका के जंगली मानव) था। वे कपड़े बहुत कम पहनते हैं और सिर पर पीली चिड़िया के पंख का ताज पहनते हैं। उनके पास 6 फीट से भी लम्बा भाला होता है। मैं अगर पानी में शरीर के साथ होती तो उसे देख नहीं पाती इसलिए मैं (आत्मा) देह से न्यारी होकर उसके पास गई। शरीर तो पानी में था। मैंने उसको कहा कि मुझे पानी में से बाहर निकालो। वह तुरन्त दौड़ा आया और मुझे बाहर निकाल लिया। सभी बच्चे डर कर रोने लगे थे। फिर हम सबने सोचा कि जब कपड़े सूख जायेंगे तब घर जायेंगे । नहीं तो घर वाले डाँटेंगे कि क्यों गए थे वहाँ? एक दूसरा मसाई हमारे घर के बगीचे में काम कर रहा था। मेरी माँ ने उससे कहा कि जाओ, देख कर आओ कि बच्चे कहाँ हैं? उसने हमें नदी के पास देखा तो पूछा कि तुम सब यहाँ पर क्यों आए? मैंने उसको सारी बात बता दी। बाद में मैंने अपने पिता को देह से अलग होने और पुन: देह में आने का अपना अनुभव बताया परन्तु उनकी समझ में नहीं आया कि यह क्या बोल रही है। उस समय मैं भी अबोध थी परन्तु बड़ी होने पर, ईश्वरीय ज्ञान मिलने पर मुझे देह से अलग होने का वह अनुभव और उसका राज स्पष्ट समझ में आ गया।

देहातीत अनुभूति पर शोध

मैंने ऐसे बहुत मामलों का अध्ययन किया है कि किसी ने भी अगर एक घड़ी भी शरीर से अलग होने का अनुभव किया तो उसकी मन:स्थिति क्या रहती है? इसे हम देहातीत अनुभव भी कह सकते हैं। इस अनुभव में आत्मा को बहुत-बहुत शक्ति मिलती है। भगवान का साक्षात्कार हो या न हो परन्तु शरीर अलग होते ही बहुत शक्ति का अनुभव होता है। उपरोक्त देह से न्यारा होने

के अनुभव में मुझे भी बहुत शक्ति का अहसास हुआ था। इस अनुभव के बाद सांसारिक बातों से मुझे वैराग्य हो गया। **जिस किसी को भी शरीर से अलग होने का अनुभव हुआ है चाहे हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, क्रिश्चियन, बौद्धी कोई भी हो, दुर्घटना, बीमारी या किसी अन्य परिस्थिति में, उसे आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त होती है।** सभी ने यही कहा कि **भक्ति**, जाति, धर्म की दीवारों से मन ऊपर उठ गया है, शान्ति अच्छी लगती है। **दूसरा, ऐसे बहुत लोग शाकाहारी बन गए। तीसरा, जिसकी बुद्धि मंद थी वह तीक्ष्ण बुद्धि वाला बन गया। सबसे बड़ी बात यह है कि ऐसे अनुभव से मरने का डर निकल गया। परिस्थितियों से भी डर नहीं लगता है। ऐसे लगता है कि हो जायेगा। जो भी होगा वो ठीक होगा। पांच वैज्ञानिकों ने अध्ययन करके उपरोक्त निष्कर्ष प्राप्त किया।** परमप्रिय शिव बाबा भी अशरीरी होने के फायदे बताते हैं और ब्रह्मावत्स तो प्रतिदिन ही इसका फायदा लेते हैं।

इच्छा से देह का त्याग सम्भव है

जब हम अशरीरी स्थिति में होते हैं तो निर्णय करने की शक्ति बढ़ जाती है। जब कोई शरीर छोड़ता है तो जिस सम्बन्ध की चाहना उसे रहती है उसी सम्बन्ध से परमात्मा उस आत्मा को लेने आता है। यह एक का नहीं करोड़ों का अनुभव है। मैंने इस क्षेत्र में काफी अध्ययन किया कि जब कोई शरीर छोड़ता है तो क्या अनुभव होता है, हम उसकी क्या मदद कर सकते हैं। इससे उसके परिवार वालों की भी सेवा हो जाती है। जब हम मरीज से बात करते हैं तो परिवार वाले भी सुनते हैं, उन्हें भी बहुत शक्ति मिलती है, वे हल्के हो जाते हैं और उन्हें दु:ख नहीं होता है। एक मेरी सहेली थी। उसने ईश्वरीय ज्ञान का केवल दो दिन का कोर्स किया था। उसे बहुत भयंकर कैंसर था। वह कभी-कभी सेन्टर पर आती थी क्योंकि उसका स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता था। एक दिन एक अस्पताल से फोन द्वारा मुझे सन्देश मिला कि वह बहुत बीमार है और मेरे लिए ही रुकी हुई है। उसका कहना था कि जब तक वह मुझे नहीं देख लेगी तब तक शरीर नहीं छोड़ेगी। सुबह मैं उसके पास गई। उसने सभी को बाहर भेज दिया। उसका हाल-चाल पूछा। उसने बताया कि खाना-पीना बन्द हो गया है, दर्द होता है। तभी उसने मुझसे पूछा कि देखो, ये कौन खड़ा है? मैंने कहा– "मुझे कोई नहीं दिख रहा है।" उसने कहा– "आपको क्यों नहीं दिख रहा है, यह तो आपका बाबा है। बाबा बोल रहा है कि जिससे आपको मिलना है वह जरूर आयेगी और आप आ गए। मुझे आपसे पूछना है कि मैंने आपको इस दुनिया के बदले दूसरी दुनिया में रास करते देखा है। मुझे डर लगता है कि मैं तो शरीर छोड़ने वाली हूँ लेकिन आपको कुछ न हो जाए।" मैंने पूछा– "आपने मेरे साथ रास करने वालों को पहचाना?" वह बोली– "नहीं, मैंने मुझे और आपको पहचाना।" मैंने पूछा– "अब कब शरीर छोड़ना है।" वह बोली– "मेरी एक दूसरी सहेली जो बहुत दूर रहती है, मैं उससे 15 वर्ष से नहीं मिली हूँ, वह कल आएगी। मैं उसके लिए रुकूँ?" मैंने कहा– "आपके शरीर में इतना दर्द है तो रुकने की जरूरत नहीं है मगर आपकी इच्छा बहुत है तो रुक जाओ।" उसकी सहेली रात को ही आ गई। उसे मालूम था कि सुबह 6 बजे क्लास होता है। मैं 6:00 से 6:30 योग में बैठती हूँ। जब मैं योग में बैठी थी तब उसने अपनी इच्छा से शरीर छोड़ा। मुझे योग में ऐसा अनुभव हुआ कि उसने शरीर छोड़ दिया है। बाबा ने कहा है कि जब कोई शरीर छोड़ता है तो एकदम शान्त वातावरण बन जाता है। उसके इतनी दूर होते हुए भी मुझे शान्ति का अनुभव हुआ। क्लास के बाद मैंने अस्पताल फोन किया। मालूम हुआ कि उसने 6:10 पर शरीर छोड़ा था।

सेल्फ पिटी (Self pity) से बचिए

जब हम शरीर छोड़ते हैं तो डर लगता है, दु:ख होता है। परिवार वालों को भी दु:ख होता है। परन्तु यह गुह्य बात है कि हम बिना दु:ख और पीड़ा के कैसे शरीर छोड़ें? हम इच्छा से छोड़ सकते हैं मगर इसके लिए ईश्वरीय ज्ञान का पूर्ण उपयोग करना पड़ेगा। यह तब हो सकेगा जब नष्टोमोहा होंगे और बाबा को साथ रखेंगे। जब हम किसी बीमारी, दुर्घटना आदि का समाचार सुनते हैं तो हमें बहुत दया आती है कि देखो कितनी भयानक स्थिति है। यह सब नकारात्मक चिन्तन है। अनभिज्ञ लोग ऐसे विचार कर सकते हैं लेकिन ज्ञानी व्यक्ति को ऐसे विचार नहीं करने चाहिएँ क्योंकि उसे मालूम है कि ड्रामा बना-बनाया है। ड्रामा में जो होना है वह होकर ही रहेगा। हम या परमात्मा कोई भी ड्रामा को परिवर्तन नहीं कर सकते हैं। तो प्रश्न है कि हम उस आत्मा के लिए क्या करें? हम आत्मा को शुभ भावनाओं का योगदान दें कि यह ठीक हो जाए। शान्ति और शक्ति का दान भी दे सकते हैं। शरीर छोड़े भी तो शान्ति से बाबा की गोद में जाए। इससे उस परेशान आत्मा को शक्ति मिलती है। हमें नकारात्मक विचार क्यों आते हैं? क्योंकि अर्ध चेतना द्वारा हम यह सोचते हैं कि हम इस परिस्थिति में होते तो हमारा क्या होता। इसे कहा जाता है 'सेल्फ पिटी'। हम उनका नहीं सोचते, हम हमारा सोचते हैं। जब 'सेल्फ पिटी' में होते हैं तो हमारे मन के विचार नकारात्मक हो जाते हैं।

✪ ✪

आध्यात्मिक एकता द्वारा प्रभु-प्रत्यक्षता

– ब्रह्माकुमार भगवान, शांतिवन

वर्तमान कलियुगी समय में अनेक धर्मों, पंथों, विचारों और वाद-विवादों की मशालें आकाश में दिखाई दे रही हैं। हर एक का यही कहना है कि हमारे प्रकाश के सिवाए अन्य कोई प्रकाश इस धरती पर अस्तित्व में नहीं है। मनुष्यों का जीवन अंधकार से प्रकाश की तरफ ले जाने का हर एक का दावा है। लेकिन सच्ची बात तो यह है कि इन मशालों के धुएँ में मनुष्यों की आँखों को ज्ञान-सूर्य परमात्मा दिखाई नहीं दे रहा है। अगर ज्ञान-सूर्य परमात्मा का दर्शन करना चाहते हो तो इन सभी मशालों को एक तरफ करना आवश्यक है अर्थात् सर्व दैहिक धर्म, पंथ, विचारों के भेदभावों को भुलाना आवश्यक है। तब ही वर्तमान समय इस सृष्टि पर अवतरित हुए ज्ञान-सूर्य परमात्मा का दर्शन कर सकेंगे। यही समय की पुकार है। इसलिए गीता में कहा गया है कि हे वत्स! देह सहित देह के सभी धर्मों को भूल मुझ एक पिता को याद कर, क्योंकि मैं ही सभी साधु-संतों का, भक्तों का उद्धार करता हूँ। फिर से वही कार्य करने के लिए परमात्मा का दिव्य अवतरण पिछले 68 वर्षों से हुआ है। अभी तक कुछ भाई-बहनों ने परमात्मा के इस अवतरण के बारे में जाना नहीं है। वे कुम्भकर्ण समान अज्ञान निद्रा में सोये हुए हैं।

सूर्योदय का सच्चा आनंद लेने के इच्छुक का बन्द कमरे में काम कैसे चलेगा? उसे बाहर आना ही पड़ेगा। मैं इस धर्म का, पंथ का, जाति का, इन सर्व दीवारों से पार जाकर, देह के सर्व संबंधियों से उपराम होकर, वस्तु-वैभव की अनेक खिड़कियाँ खोलकर, अज्ञान-निद्रा का त्याग कर बाहर आना आवश्यक है। मैं एक श्रेष्ठ आत्मा हूँ.....मैं देह नहीं हूँ.....बल्कि देह की मालिक हूँ। यह ज्ञान प्राप्त होते ही आत्मा-पंछी बन्द घर से मुक्त होकर, महावीर समान उड़कर ज्ञान-सूर्य परमात्मा के साथ मंगल-मिलन का आनंद लेती है।

आध्यात्मिक एकता के लिए आधारभूत ज्ञान

सभी मनुष्य आत्माओं का पिता एक है। उसको ही विभिन्न धर्मों में शिव, ॐकार, अल्लाह, गॉड, जेहोवा आदि नामों से पुकारते हैं। परमात्मा शिव निराकार हैं, वैसे ही हम आत्माएं भी निराकार हैं। हम एक ही परमात्मा के बच्चे आपस में भाई-भाई हैं। परमात्मा सर्व गुणों के, सर्व शक्तियों के, ज्ञान के सागर हैं। हम आत्माएं शक्तिस्वरूप हैं। हम सभी का वास्तव में धर्म ''शान्ति'' है। ॐशान्ति के मंत्र का भी अर्थ है कि मैं आत्मा शान्त-स्वरूप हूँ। हम सभी आत्माओं का घर एक है। चांद, सूर्य, तारागण से भी पार शान्तिधाम, परमधाम के हम सभी निवासी हैं। वहाँ से हम इस सृष्टि रूपी रंगमंच पर अपना-अपना पार्ट बजाने के लिए आए हैं। हम सभी का आदि-अनादि स्वरूप भी एक ही है। हर आत्मा अनादि स्वरूप में सुखस्वरूप, शांतस्वरूप, आनंदस्वरूप, प्रेमस्वरूप, पवित्रस्वरूप, ज्ञानस्वरूप और शक्तिस्वरूप है। लेकिन सृष्टिचक्र में अपने-अपने कर्मों के अनुसार आत्माओं के संस्कारों में, गुणों में परिवर्तन हो गया है। हर आत्मा को इस अनादि सृष्टिचक्र को जानना जरूरी है। इस प्रकार स्वयं की सत्य आत्मिक पहचान, अपने पिता की पहचान, अपने असली घर की पहचान होने से सर्व दैहिक धर्म भूल जाएंगे और आध्यात्मिक एकता आएगी जिससे विश्व की सर्व समस्याएं समाप्त हो जायेंगी।

आध्यात्मिक एकता द्वारा प्रभु-प्रत्यक्षता

शिव परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, जो नियम-मर्यादाएँ सिखाई हैं, उन्हें जीवन में लाने का पुरुषार्थ करने से ही आपसी एकता आएगी जिस द्वारा प्रभु की प्रत्यक्षता होगी। आपसी एकता बनी रहे, इसके लिए ध्यान रहे – 1. अपने संबंध-सम्पर्क में आने वालों के गुण ही देखने हैं, 2. स्वमान में रहना है, 3. एक-दूसरे की राय-सलाह को सम्मान देना है, 4. सभी के साथ समान व्यवहार करना है, 5. जो हो गया, उसे भूल जाना है, 6. सभी के प्रति भाईचारे की शुभ भावना रखनी है। आपसी वैर-विरोध भूलकर खुद को एकता के सूत्र में बांधना है, 7. रोज अमृतवेला योग शक्तिशाली करना है, 8. आत्माभिमानी बनकर रहना है, 9. जीवन में आने वाली छोटी-बड़ी समस्याओं का स्वयं समाधान करना है, 10. मैं-पन का त्याग कर निमित्त समझकर चलना है, 11. परमात्मा से प्राप्त अविनाशी खज़ानों के नशे में रहना है, 12. सदा ज्ञानयुक्त, योगयुक्त, स्वमानयुक्त, एकाग्रचित्त रहना है, 13. सदा तृप्त, भरपूर, उपराम होकर रहना है।

स्व-परिवर्तन से प्रभु-प्रत्यक्षता

परमशिक्षक शिव परमात्मा इस सृष्टि पर अवतरित होकर जो सर्वोच्च ज्ञान दे रहे हैं उसकी प्रत्यक्षता स्वयं के जीवन से होगी। जिस प्रकार कोई मूर्तिकार अपनी कला का साक्षात्कार अपनी सुन्दर कलाकृति द्वारा कराता है, उसी प्रकार जो नवसृष्टि का रचयिता है, उसकी प्रत्यक्षता भी उसकी रचना के द्वारा ही होगी। इसलिए गायन भी है कि 'जिसकी रचना इतनी सुन्दर वह कितना सुन्दर होगा'। प्रभु-प्रत्यक्षता के लिए स्व-परिवर्तन के ऊपर ध्यान रखना अर्थात् स्वयं को ज्ञानमूर्त, तपस्वीमूर्त, धारणामूर्त, दर्शनीयमूर्त और अनुभवीमूर्त बनाकर रखना ज़रूरी है। तब ही सभी को चलन और चेहरे द्वारा अलौकिकता नजर आएगी। एकता, एकाग्रता, स्वउन्नति और सेवा का संतुलन रख प्रभु-प्रत्यक्षता करने की सेवा करनी है। साथ-ही-साथ अपने संबंध-सम्पर्क में आने वालों को भी वाणी द्वारा, ईश्वरीय साहित्य द्वारा या कोई-न-कोई माध्यम से ईश्वरीय संदेश देना है। शिव भोलेनाथ ने हमारे सामने पिछले 68 वर्षों से ज्ञान का डमरू बजा-बजाकर अगम-निगम के सर्व भेद खोले हैं। अनेक वरदानों से हमें भरपूर किया है। उन्होंने हमें सर्व संबंधों से पालना दी है। ज्ञान-रत्नों से हमारी झोली भर दी है। तो ऐसे शिव भोलेनाथ की प्रत्यक्षता अब सारे विश्व में करना, यही हमारा परम कर्त्तव्य है।

धन जिसका गुलाम, वही है भाग्यवान

– ब्रह्माकुमारी ममता, पानीपत

कई बार खाते-पीते धनवान लोग, अधिक धन की लालसा में ऐसे कार्य कर बैठते हैं जो यहाँ-वहाँ चर्चा का विषय बन जाते हैं। एक धनाढ्य व्यक्ति की दुकान पर फोन था। आस-पास के लोगों के पास ये सुविधा नहीं थी। उस धनाढ्य व्यक्ति ने नियम बना दिया कि जिस किसी का भी सन्देश उसके फोन पर आयेगा, उसको सुनने के बदले 5 रुपये शुल्क लिया जायेगा। है न आश्चर्य की बात! गरीब आदमी जिस सुविधा को नि:शुल्क दे देता है उसी सुविधा के बदले अमीर पैसे वसूलता है, यह धन की अति भूख नहीं तो और क्या है?

संसार में रहते हरेक को धन की आवश्यकता होती है। धन तो सुख और आराम के लिए होता है लेकिन यह ध्यान रखें कि ऐसा धन भी ना कमाएँ जो रातों की नींद और दिन का चैन ही भाग जाए। ऐसा धन कमाने का क्या फायदा जिससे दु:ख बढ़ जाएँ। अगर हम मर्यादित रीति से कमाएँ तो दु:ख नहीं होगा। एक कवि ने बहुत अच्छी बात कही है – "भाग्यवान वो जिसका धन गुलाम है, अभागा वो, जो धन का गुलाम है", सोचो हम कैसे हैं? आज धन कमाने की लालसा इसलिए ज्यादा है क्योंकि इच्छाएँ बढ़ती जा रही हैं। बढ़ी हुई इच्छाओं की पूर्ति के लिए इन्सान गलत तरीके से धन कमाने की सोचता है। इच्छाएँ इंसान को कभी अच्छा नहीं बनने देतीं।

एक ऐतिहासिक घटना सुनाते हैं कि एक गरीब कलाकार की कला पर प्रसन्न होकर राजा ने उसे अशर्फियों से भरे $8^1/_2$ घड़े इनाम में दे दिए। कलाकार के मन में प्रसन्नता तो हुई पर साथ ही एक चाह-सी उठी कि 9वाँ घड़ा आधा खाली है, भर जाए तो कितना अच्छा हो! इस विचार ने उसे बेचैन कर दिया और वह मारा-मारा फिरने लगा कि कहीं से आधा घड़ा अशर्फियाँ मिलें। भरे हुए 8 घड़े उतना सुख नहीं दे पाए जितना दु:ख उसे आधे खाली घड़े को देख कर उत्पन्न हो गया। इसलिए कहा जाता है – 'बढ़ता है लोभ अधिक धन के संचय से।' जब तक एक भी घड़ा नहीं था तो चैन से सोता था, इतने मिल गए तो चैन छिन गया। वाह रे इन्सान, तेरी कैसी प्रवृत्ति है?

आज इन्सान पैसा कमाने के लिए अपने स्वास्थ्य को गँवा देता है। और जब स्वास्थ्य की ओर ध्यान देता है तो उस समय पैसा देकर भी स्वास्थ्य नहीं खरीदा जा सकता। एक व्यक्ति ने बताया कि मैं कितनी दवाइयाँ खा चुका हूँ लेकिन मुझे नींद नहीं आती, आखिर क्या करूँ? उसने कारण बताया कि मैं मुनीमी का काम करता था। ज्यादा काम के दिनों में नींद को रोकने के लिए आँखों पर पानी के छींटे मारता था। उस समय पैसे कमाने के लालच में नींद को भगाता था और इस समय पैसे देकर भी नींद नहीं खरीद सकता। इसलिए हमें पैसे से ज्यादा अपने स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए।

एक कहावत है – "आप भया बूढ़ा, तृष्णा भई जवान।" सिकन्दर जब भारत में आया तो उसने एक योगी की दिल से सेवा की। योगी के मन में आया कि सिकन्दर को जरूर कोई इच्छा है जिसके कारण यह मेरी इतनी सेवा कर रहा है। उसने राजा सिकन्दर से पूछा – 'आप क्या चाहते हैं?' राजा ने कहा – 'मेरा सारे विश्व पर राज्य हो जाए।' योगी ने कहा – 'तथास्तु, लेकिन मेरी एक शर्त है, यह एक खप्पर है इसे आप अनाज से भर देना।' सिकन्दर ने कहा – 'महाराज जी, आप अनाज की बात कर रहे हैं, मैं तो इसे हीरों से भर दूँगा।' तभी उसने सैनिकों से हीरे

मँगवाये और लगा भरने। बहुत देर हो गई भरते-भरते लेकिन खप्पर भरने को ही नहीं आया। सिकन्दर थक गया। योगी ने कहा – 'यह खप्पर मानव की इच्छाओं का प्रतीक है, यह कभी नहीं भरता। एक इच्छा पूरी होती है तो दूसरी आ जाती है, दूसरी पूरी होती है तो तीसरी आ जाती है। इस तरह मानव की इच्छाएँ कभी पूरी नहीं होती हैं। आज आप विश्व पर राज्य करना चाह रहे हैं फिर आकाश पर और फिर अन्य ग्रहों पर राज्य करना चाहेंगे। इस तरह सारे विश्व पर राज्य प्राप्त करने के बाद आपकी इच्छाएँ शान्त होने के बजाए और बढ़ेंगी।'

हमारे सामने अमेरिका देश का उदाहरण है। उस देश में बहुत सम्पन्नता है लेकिन लोगों का आपसी प्यार खत्म हो चुका है। बच्चों को माँ-बाप का प्यार नहीं मिलता। तलाक जैसी वारदातें इतनी हैं कि सही गिनती करना भी मुश्किल है। घर का वातावरण अच्छा नहीं है। आधे से ज्यादा लोग मस्तिष्क के रोगों से ग्रसित हैं। इस प्रकार के रोगों का कारण वैभवों का अधिक संचय करना है। इससे सिद्ध है कि वैभवों से कभी भी हमारे मन को शान्ति नहीं मिल सकती। सुख-सुविधाएँ बहुत हैं लेकिन मानसिक सुख-शान्ति नहीं है। सुख-शान्ति के लिए स्थूल धन की नहीं लेकिन ज्ञान रूपी धन की जरूरत है, जीवन में आध्यात्मिकता की ज़रूरत है।

अगर जीवन में धन की अधिकता है तो ध्यान रहे कि हम कंजूस ना बन जाएँ। एक व्यक्ति इतना कंजूस था कि एक बार वह कुछ पैसे हाथ में लेकर (गर्मी के दिनों में) बाजार में जा रहा था। हाथ में पसीना आ गया तो उसने पैसों को प्यार किया और बोला कि तुम रोते क्यों हो, मैं तुम्हें खर्च नहीं करूँगा। यह है कंजूस की हालत। आज इन्सान पैसे के लिए नारकीय कर्म करने को भी तैयार है।

हम याद रखें कि आत्मिक बल वाले की पैसे से ज्यादा मान्यता है। महात्मा गाँधी जी जब एक सम्मेलन में भाग लेने के लिए लंदन गए तो वे धोती पहन कर, कन्धे पर चादर डाल कर चले गए। वहाँ का कानून था कि जो भी सम्राट से मिलने जाए वह पेंट-शर्ट पहन कर जाए। गाँधी जी ने कहा कि भारत का गरीब निवासी ऐसा नहीं करेगा। मेरे देश की जनता भूखी मर रही है और मैं पेंट-शर्ट डाल कर घूमूँ यह मुझे शोभेगा नहीं। सम्राट को यह सारी बात बताई गई। सम्राट ने कहा कि ऐसे महान पुरुष से तो मैं मिलना चाहता हूँ, चाहे वह कैसे भी आये। तो देखिए, आत्मिक बल की कमाल! सादगी ही सच्चा सम्मान पाती है।

परमात्मा पिता कहते हैं कि श्रेष्ठ कर्मों का धनी और ज्ञान का धनी ही सच्चा धनवान है। यह धन जन्म-जन्म आत्मा के साथ जाता है। बाकी सब कुछ तो यहीं छूट जाता है। इस सच्चे धन से आत्मा जन्म-जन्म सुख पाती है। प्यारे शिव बाबा इस संगमयुग पर ज्ञान-रत्नों का अविनाशी धन बाँट रहे हैं। ज्ञान के एक-एक रत्न की कीमत अतुलनीय है। जो अभी जितने ज्यादा ज्ञान-रत्न ग्रहण करेगा, सतयुग में वह उतना ही ऊँचा पद प्राप्त करेगा।

✤✤

रहम

जब तक हमारे में यह संकल्प नहीं आयेगा कि मुझे बुराइयों को छोड़ना है, मुझे अच्छा बनना है, मुझे भगवान की आश पूरी करनी है तब तक भगवान भी रहम नहीं करेगा। इस रीति से, स्वयं को परिवर्तन करने का दृढ़ संकल्प करना ही स्वयं पर रहम करना है। शिव बाबा कहते हैं, बच्चे, स्वयं पर भी रहम करो और दूसरों पर भी रहम करो अर्थात् इन विकारों और दु:खों से उनको छुटकारा पाने का रास्ता बताओ। ★★



– ब्रह्माकुमार सूरत, काठमाण्डु (नेपाल)

कुछ समय पहले फ्रान्स का लखधर नाम का एक युवा नेपाल की यात्रा पर आया था। वह अपने देश से तो दूर आ गया था परन्तु जीवन की मायूसी और अन्दरुनी चिन्ता अभी भी उसके साथ थी। जीवन की हर बाजी वह हार चुका था। माँ-बाप, मित्र-सम्बन्धी सभी उससे अलविदा ले चुके थे। जीवनसंगिनी से भी सुमधुर सम्बन्ध ना होने के कारण जीवन में सन्तुष्टता नाम की कोई चीज़ नहीं रही थी। जीव-हत्या के कगार पर वह पहुँचा हुआ था। जीवन का बोझ उठाए हुए, क्या और क्यों के प्रश्नों में उलझा हुआ, उदासी भरे चेहरे के साथ वह काठमाण्डु स्थित सेवाकेन्द्र पर आया। परेशान मन से उसने सेवाकेन्द्र की गतिविधियों की जानकारी ली। उसके बाल बिखरे हुए थे, दु:ख और अशान्ति की काली परछाई उस पर मंडरा रही थी। टूरिस्ट गाइड उसे लेकर आया था। उसके निरुत्साहित वचन ऐसी भासना दे रहे थे मानो हॉस्पिटल से लम्बी बीमारी काट कर वह आया हो। हिम्मतहीन मन और पीला चेहरा लिए वह बूढ़े जैसा लग रहा था। आध्यात्मिक संग्रहालय देखने तथा राजयोग के कोर्स की जानकारी लेने के बाद उसने जीवन के दर्द का बखान शुरू किया और पूछा – क्या राजयोग से मेरी इस हालत में परिवर्तन और सुधार आ सकता है? क्या मुझे जीने की नई हिम्मत मिल सकती है? क्या मैं अपने भविष्य के बारे में आशान्वित हो सकता हूँ? कुछ समय के विचार विमर्श के बाद उसमें आशा और विश्वास का संचार हो गया। अगले दिन प्रात:काल वह कोर्स करने पुन: पहुँच गया। पेशे से वह संयुक्त अधिराज्य इंगलैण्ड स्थित किसी फैक्ट्री में काम करता था। दिशाविहीन तो वह था ही, कोर्स के दौरान वह यह भी जानना चाहता था कि मुझ पर इतने प्रकार के कष्टों और परिस्थितियों का प्रहार क्यों हुआ है? धार्मिक आस्था और विश्वास की रीति से वह इस्लाम धर्म से था पर किसी एक विचार, भावना और आस्था का बन्दी नहीं था। उसके विचार स्वतन्त्र थे, आयु से वह करीब 21 वर्ष का था।

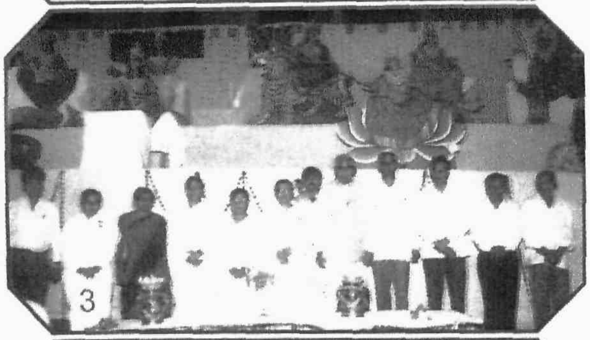
पढ़े-लिखे उस नवयुवा की ऐसी हालत देख कर लगा कि जरूर इसके जीवन में अच्छे मार्गदर्शन का अभाव रहा है। उसने जी भर कर अन्दर की पीड़ा और कष्ट का बखान किया। उसका मन वैराग्य से भरपूर था और वह निर्णय नहीं कर पा रहा था कि क्या करे और क्या न करे। उसे बड़े ही स्नेह से आत्मा के अविनाशी अस्तित्व का बोध कराया गया। लगातार तीन दिन तक आत्मा का ही पाठ पढ़ाया गया और आत्मा के स्वरूप के अभ्यास की कॉमेन्ट्री कराई गई। तीन दिन के बाद उसे **महसूस हो गया कि मुझे उदास और दु:खी बनाने वाले मेरे ही नकारात्मक एवं व्यर्थ संकल्प हैं। इन्हीं से मेरा आत्मबल एवं मन की शक्ति क्षीण हो गई है। जब उसने आत्मा के मूल गुणों और विशेषताओं का व्यवहारिक अभ्यास शुरू किया तो उसे बड़ा ही मजा आने लगा। उसे पक्का विश्वास हो गया कि मैं तो अमर अस्तित्व वाली आत्मा हूँ और देह को धारण कर इस सृष्टि रंगमंच पर कर्म का अभिनय कर रही हूँ, दु:खी एवं अशान्त बनाने वाले देहाभिमान के स्वभाव-संस्कार**

हैं जिन्हें मनोविकार एवं विकृति कहा जाता है, परमपिता परमात्मा अनन्त सुख, शान्ति, प्रेम, पवित्रता का शाश्वत स्रोत है, उनसे ही मुझ आत्मा का अकाट्य, अविभाज्य नाता है, आत्मा और परमात्मा का अविनाशी सम्बन्ध ही सच्चे सुख और समुन्नति का आधार है, इसे ही राजयोग साधना कहा जाता है। यह सब जान कर वह नित्य कॉमेन्ट्री के आधार पर अभ्यास करने लगा। यह अभ्यास प्यासे के लिए सावन की अनुभूति सिद्ध हुई। उसके मन में नव आशा के दीप जग उठे। जिसका कोई नहीं होता है उसका भी कोई और है जिसकी छत्रछाया सदा सर्वदा बनी रहती है। वही सर्वोच्च शक्ति सभी के ऊपर सुख, शान्ति एवं पवित्रता की निर्मल धारा निरन्तर प्रवाहित कर रही है, ऐसा उसे लगने लगा। जब-जब प्रभु की स्नेहपूर्ण स्मृति में वह बैठा तो पिता परमात्मा ने उसे ऐसे सुख भरे अनुभव कराए कि उसके उजाड़ दिल में भी बसन्त बहार झूमने लगी। उसमें जीवन के प्रति प्रेम उमड़ने लगा। उसे लगा कि मैं ही प्रभु से दूर था, वे तो सदा सर्वदा मेरे ऊपर अपनी अलौकिक छत्रछाया फैलाए हुए ही हैं। सारी-सारी रात वह परमज्योति से लगन लगा कर खेलने लगा। उसे नये-नये अनुभव होने लगे। उसने अपने शब्दों में कहा कि मुझे राजयोग में बहुत पहले आना चाहिए था। मुझे क्या पता था कि यह राजयोग मेडिटेशन मन की इतनी सच्ची शान्ति और सुख दे सकता है और जीवन जीने की कला भी सिखा सकता है। अब तो हर दिन उसका सुख भरा दिन और हर शाम प्रभु मिलन की शाम होने लगी। उसने कहा– मैं एक मास तक, दिन भर कॉमेन्ट्री के आधार पर अभ्यास करते हुए राजयोग को सरल एवं स्वाभाविक बनाऊँगा। वह गहरे अध्ययन और पठन-पाठन में जुट गया। आखिर उसकी वीजा की अवधि पूरी होने लगी। उसने सारी राय सलाह ली कि अब क्या करना है। वह जहाँ रहता था उस स्थान के सेवाकेन्द्र का पता उसे दिया गया। वह राजयोग के दैनिक अभ्यास से अपने भविष्य के प्रति आशान्वित हो चुका था। उसके लिए योग इतना बड़ा वरदान सिद्ध हुआ कि वह कहने लगा – ''मुझे नया जन्म दिया है राजयोग मेडिटेशन ने, इसने मेरे जीवन की ज्योति जगा दी है। मेरे में नई रोशनी एवं नया उमंग-उत्साह भर दिया है। अब मुझे सारा संसार अपना लगता है और मैं सभी का हूँ। अनाथ नहीं सनाथ हूँ। अब सर्वशक्तिवान सर्वसमर्थ परमपिता परमात्मा मेरा साथी है। मैं कालाधीन नहीं, परन्तु अकालमूर्त, अजर-अमर आत्मा हूँ। मेरे स्वभाव में ही सारी खुशी और सन्तुष्टि समाई हुई है।'' जब वह नेपाल छोड़ कर अपने देश जाने लगा तो राज बहन ने उसे स्नेहपूर्वक आत्मिक तिलक के साथ गुलाब के पुष्प देते हुए ईश्वरीय सौगात के रूप में परमात्मा का चित्र दिया। उसके नयन ईश्वरीय स्नेह और सद्भाव से अश्रुपूरित हो गए। उसे लगा कि कैसा दिव्य है यह दैवी परिवार, जो कहाँ के भी व्यक्ति को अपने परिवार का, एक प्रभु का, एक परमधाम रूपी लोक का रहवासी मानता है। समय-प्रति-समय उसके यही समाचार और ई-मेल आते रहे कि नया जीवन देने वाले बाबा का बार-बार शुक्रिया, मैं जब भी आत्मिक स्थिति के साथ परमात्मा की स्मृति में बैठता हूँ तो जैसे कि नव प्राण मिलते हैं। वह यही कहता रहा कि मुझे जिस जीवन के प्रति नाउम्मीद थी उसे अपार खुशियों से भरने वाला राजयोग, एक वरदान है, जो हर चेहरे को हँसाता है, हर दिल को खुशी देता है और हर जीवन में हरियाली लाता है। अभी भी उसका सम्पर्क आश्रम से है और वह दैवी परिवार से मार्गदर्शन लेता रहता है।

ब्र.कु. आत्मप्रकाश, सम्पादक, ज्ञानामृत भवन, शान्तिवन, आबू रोड द्वारा सम्पादन तथा ओमशान्ति प्रेस, शान्तिवन – 307510, आबू रोड में प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के लिए छपवाया । सह-सम्पादिका ब्र.कु. उर्मिला, शान्तिवन
E-mail : shantivan@vsnl.com (Ph. No. (02974)- 228125, 228126 gyanamrit@vsnl.com















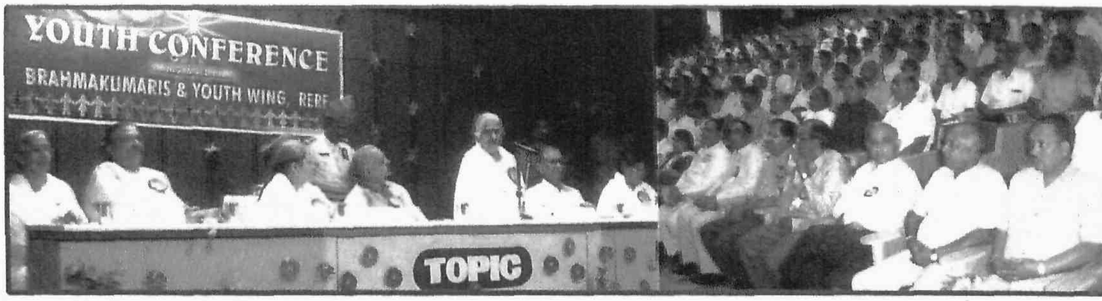


1. **संगरूर-** पंजाब की उप-मुख्यमन्त्री बहन राजिन्दर कौर भट्ठल को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. हरजीत। 2. **पाण्डीचेरी-** पाण्डीचेरी के राज्यपाल महामहिम भ्राता एम.एम. लाखेरा को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शान्ता। 3. **माणसा-** चैतन्य देवियों की झाँकी के उद्घाटन के पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में हैं गुजरात विधान सभा के अध्यक्ष प्रो. मंगल भाई पटेल, नगर पालिका प्रमुख भ्राता गोविन्द भाई पटेल, ब्र.कु. सरला, ब्र.कु. प्रभा तथा अन्य। 4. **श्रीनगर-गढवाल-** सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव का उद्घाटन करते हुए उत्तरांचल के परिवहन मन्त्री भ्राता हीरा सिंह विष्ट। साथ में हैं ब्र.कु. सुनीता, ब्र.कु. सन्तोष बहन तथा अन्य। 5. **जोधपुर (हाउसिंग बोर्ड)-** 'राजस्थान पत्रिका' के मालिक, मुद्रक, प्रकाशक भ्राता प्रशान्त कोठारी को ईश्वरीय सौगात देती हुई ब्र.कु. शील। 6. **बल्लबगढ़-** अन्तर्राष्ट्रीय विकेट कीपर भ्राता अजय रत्तरा को ईश्वरीय सन्देश देते हुए ब्र.कु. ज्योति भाई। 7. **गयाना-** गयाना विश्वविद्यालय की उप-कुलपति डॉ. बहन रोज से सम्मान-चिन्ह प्राप्त करती हुई ब्र.कु. मीरा। 8. **शेफल्ड (यू.के.)-** 'पर्यावरण प्रदूषण एवं मानसिक प्रदूषण का आपसी सम्बन्ध एवं निवारण' विषय पर प्रवचन के पश्चात् ब्र.कु. भारत भूषण भाई, ब्र.कु. डॉ. जुलिया, ब्र.कु. नटु तथा अन्य के साथ समूह चित्र में।

Regd. No. 10563/65, Postal Regd. No. RJ/WR/25/12/2003-2005, Posted at Shantivan – 307510 (Abu Road) on 5-7th of the month.



कानपुर- 'स्वर्णिम भारत महोत्सव' का उद्घाटन करते हुए महापौर भ्राता अनिल शर्मा, राजयोगिनी दादी जानकी जी, केन्द्रीय गृह राज्यमन्त्री भ्राता श्री प्रकाश जायसवाल, राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी जी तथा अन्य।



अहमदाबाद- युवा सम्मेलन में आशीर्वचन देती हुई राजयोगिनी दादी जानकी जी। साथ में मंच पर विराजमान हैं गुजरात के राज्यपाल महामहिम भ्राता नवलकिशोर शर्मा, ब्र.कु. सरला बहन, गुजरात क्रिकेट एसोसिएशन के प्रमुख भ्राता नरहरि अमीन, ब्र.कु. चन्द्रिका बहन, निरमा विश्वविद्यालय के उपकुलपति भ्राता एन.वी. वसाणी जी तथा अन्य।



मुम्बई- 'आध्यात्मिक मेधा के द्वारा व्यवसायिक जीवन का पुनर्शोध' विषयक कार्यक्रम को सम्बोधित करती हुई ब्र.कु. जयन्ती बहन। चार्टर्ड अकाउन्टेंट तथा कर सलाहकार ध्यानपूर्वक सुनते हुए।



लखनऊ (गोमती नगर)- लोकायुक्त न्यायमूर्ति भ्राता एस.सी. वर्मा को ईश्वरीय सौगात देती हुई राजयोगिनी दादी जानकी जी। साथ में हैं ब्र.कु. राधा बहन।



अहमदाबाद- ब्र.कु. ओमप्रकाश भाई को 'इन्टरनेशनल एसोसिएशन ऑफ एज्यूकेटर्स फॉर वर्ल्ड पीस' द्वारा प्रदत्त अन्तर्राष्ट्रीय अवॉर्ड से सम्मानित करते हुए गुजरात विधान सभा के अध्यक्ष प्रो. मंगल भाई पटेल। साथ में हैं आयोजक संस्थान की भारतीय इकाई के निदेशक डॉ. भ्राता नानू भाई जोशी।